गुरु चरणों में पूर्ण समर्पित

परम स्नेही शान्त एवं सरल स्वभावी

शान्ति ज्योति पत्रिका

के

मूल स्तम्भ

कर्मठ एवं मूक कार्यकर्त्ता

मेरे अनुज

श्री कान्तिलालजी जैन

को

सादर समर्पित

❑

पावनचन्द सिंघवी

''कई लोग बीते हुए कल के
खोये हुए समय के लिए विलाप करते हैं
और आज जो समय व्यर्थ में खो रहे है
उसके लिए कल विलाप करेंगे।
उठो, समय को हाथ से मत गँवाओं।
आगे बढ़ो। अपने नेत्र ईश्वर पर जमा दो
और उसे अपने अन्दर ढूंढ़ो।
.... अपने देवता, गुरु की पूजा करो,
भक्ति करो, उसमें इस तरह विश्वास करो
जैसे कि वह ही तुम्हारा रक्षक है।
फिर तुम भक्ति के द्वारा मोक्ष प्राप्त कर लोगे।''

गुरुदेव श्री विजय शांति सूरीश्वर जी

नित्य गुरु प्रार्थना

''या जग में कोऊ है नहीं, गुरु सम दीन दयाल,
शरणागत को जान के, भले करो प्रतिपाल।

मनछा वाछा करी दया, गुरु चरणे चित्त लाय,
जग समुद्र के तरण को, नहीं अन्य उपाय।।

सद्गुरु ब्रह्म स्वरूप है, मनुष्य भाव मत जान,
देह छता माने दया, तेह पशु समान।

नित्य प्रति वंदन कीजिये, गुरु को शीष नमाय,
दया सुखी कर देत है, प्रभु रूप दर्शाय।।

जेते कर्म है पाप के, मुझ से बचे न कोय,
प्रभुजी अब राखे बने, वृद्ध बाने की टेक।

नहीं संयम नहीं साधना, नहीं तीर्थ व्रत ध्यान,
मात भरोसे रहत है, जैसे बालक नादान।।

॥ ॐ ह्रीं अर्ह नमः ॥

देह छतां जेनी दशा वर्ते देहातीत।

ते ज्ञानी ना चरण मां हो वंदन अगणीत॥

□

गुरुदेव के आदर्श जीवन की एक झलक

□

बाल्यकाल :

गुरुदेव श्री विजय शांति सूरीजी का जन्म सं. 1946 माघ सुदी 5 दिनांक 25-1-1890 के शुभ दिन राजस्थान के सिरोही जिले में मणादर नामक ग्राम में हुआ था। आपके पिता भीमतोलाजी और माता वसुदेवी ने आपका नाम सगतोजी रखा। पूर्व के प्रबल संयोग से आपको आठ वर्ष की उम्र में महान् तपस्वी श्री तीर्थ विजयजी के दर्शन हुए और आप उनकी सेवा में रख लिए गये। आठ वर्ष तक सगतोजी ने तीर्थ विजयजी के पास रह कर विद्याभ्यास तप व ध्यान किया, साधुओं के आचार-विचार प्रतिक्रमण आदि क्रियाएँ सीखीं।

सं. 1961 की वसंत पंचमी दिनांक 9-2-1905 को जब आपकी उम्र 16 वर्ष की हुई, आपने रामसीन गांव में जैन दीक्षा अंगीकार की और तब से आपका नाम मुनि श्री शांतिविजयजी रखा गया। दीक्षा महोत्सव में रामसीन के सेठ श्री नोपाजी डाह्याजी ने बहुत द्रव्य व्यय किया व ठाकुर सा. श्री जोरावरसिंह जी का भी अच्छा सहयोग रहा।

दीक्षा के बाद मुनि श्री शांति विजयजी मांडोली पधारे, जहाँ कि आपके दादा गुरु श्री धर्म विजयजी का अग्नि संस्कार किया गया था। उस पुण्य स्थान का दर्शन करके आप वापस रामसीन आये। रामसीन में सेठ नोपाजी डाह्याजी का एक सुन्दर मकान था, उसमें भयवश कोई निवास नहीं कर सकता था। सेठ की प्रार्थना पर गुरुदेव ने वहाँ तीन दिन निवास कर ध्यान किया जिससे भय का नाम निशान भी नहीं रहा और बाद में सब आनन्द पूर्वक उसमें रहने लगे।

"भक्ति भक्त भगवंत गुरु, चतुर नाम वपु एक।
इनके पद वंदन किये, नासइ कोटि कलेश॥"

साधना :

कुछ समय पश्चात् गुरुदेव आत्म-साधना हेतु आबू गिरिराज की गुफाओं में व मार्कण्ड ऋषि के आश्रम व सरस्वती देवी के मंदिर में पधार गये। यह मार्कंडेश्वर व सरस्वती मंदिर अजारी (सिरोही) ग्राम के समीप है। वहां पर श्री सिद्धसेन दिवाकर, श्री अभय देव सूरी, श्री बप्पभट्ट सूरि, कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य आदि कई महापुरुषों ने ध्यान किया हुआ है, जिस प्रकार श्री जिनदत्त सूरिजी ने ऊँकार का ध्यान, श्री हेमचन्द्राचार्य[1] ने अर्हंमपद का ध्यान, श्री जिन कुशल सूरिजी ने माया बीज का ध्यान विशेषतया किया

---

1. ध्यान से कर्मों की निजरा होकर आत्मज्ञान प्राप्त होता है। ध्यान किस प्रकार किया जाता है, उसके क्या भेद व स्वरूप हैं इसकी जानकारी के लिए हेमचन्द्राचार्य कृत योगशास्त्र आदि ग्रन्थों का अध्ययन करना चाहिये।

था। उसी प्रकार गुरुदेव ने ॐ ह्री अर्हम नम:'' का ध्यान मुख्य रूप से किया। इसके साथ ही कई बीजाक्षरों को सिद्ध करके व सोहम् व पिंडस्थ आदि ध्यान के द्वारा आत्मज्ञान प्राप्त किया आपके पूर्वजन्म के संस्कारों से आपको सहज ही आत्मज्ञान प्रकट हो गया। ध्यानस्थ दशा में आपको दादा गुरु श्री धर्म विजयजी की अपूर्व कृपा सहज ही में प्राप्त हो गई थी।

सं. 1968 के लगभग गुरुदेव गुजरात व मालवा की तरफ विचरे। पालीताना की यात्रा करने पर वहाँ आपकी एक जैन मुनिराज से भेंट हुई, वे आगम और जैन शास्त्रों के पूर्णज्ञाता और जैन शैली के अच्छे जानकार थे। उन मुनिराज ने भी विचार-विनिमय के पश्चात् गुरुदेव की भूरी-भूरी प्रशंसा करते हुए कहा कि— ''शांतिविजयजी आप तो जैन शास्त्रों के मर्म को मेरी अपेक्षा भी अधिक बारीकी से जानते हैं। मालूम पड़ता है कि आपमें जन्म-जन्मांतरों के संस्कार छिपे हुए हैं। पालीताणा से विहार करके कुछ समय गिरनार पर्वत पर ध्यान करते हुए गुजरात में गोधरा तक आपने विचरण किया फिर मालवा की तरफ पधारे। मालवा में धारनगरी में आनन्द हाई स्कूल के प्रांगण में आपका आर्य समाजियों से शास्त्रार्थ हुआ था। जिसकी अध्यक्षता वहां की रानी साहिबा लक्ष्मी बाई (राजा उदय जी राव साहब की रानी) ने की थी। शास्त्रार्थ में गुरुदेव ने थोड़े ही समय में ऐसे तर्क उपस्थित किये जिससे सभा को आपके पक्ष की सत्यता का भान हो गया और रानी साहिबा ने फैसला दिया कि शास्त्रार्थ में शांतिविजयजी की जीत हुई है।

मालवा से गुरुदेव ने मांडोली की तरफ विहार किया जिसकी सूचना गुरु श्री तीर्थ विजयजी को दे दी। मांडोली पहुँचने पर गुरु-शिष्य का मिलाप एक लंबे अर्से बाद हुआ।

अपने गुरु के पास कुछ समय रहने के बाद आप उग्र साधना द्वारा पूर्णता प्राप्त करने हेतु आबू की तरफ विहार किया। आपने सतत ध्यान के साथ भीषण तपश्चर्या प्रारम्भ की जिसकी कल्पना करना भी कठिन है। आबूरोड के पास ऋषिकेश नामक स्थान है, वहां सैकड़ों साँपों का निवास स्थान है। आपने उस स्थान पर साँपों के बिलों पर बैठकर निरंतर छः महीने ध्यान किया। इन दिनों आप सिर्फ एक बार उड़द के बाकुलों का आहार लेते थे। इस समय आप की सेवा में खोड ग्राम का ब्राह्मण भभूताजी रहता था जो बाकुलें बहराने जाते समय साँपों को इधर-उधर गुरुदेव के पास फिरते देखकर भयभीत होकर शीघ्र लौट जाता था। भभूताजी ने बताया कि एक बार गुरुदेव ने एकांक्षी नारियल मँगवाकर उसे भी सिद्ध किया था। गुरुदेव बोलते थे उसका जवाब श्रीफल देता था और श्रीफल के बोलने पर गुरुदेव जवाब देते थे। श्रीफल को सिद्ध करने के बाद गुरुदेव ने उसे कुएँ में डलवा दिया।

सं. 1973-74 से चार्तुमास में आप जोधपुर प्रदेश के जसवन्तपुरा ग्राम के सुन्दा पहाड़ पर विराजते थे। पहाड़ पर चामुण्डा देवी के मंदिर में नवरात्रि के त्यौहारों पर बहुत-से पशुओं को वध करके भोग लगाया जाता था। आपने इस हिंसा को बन्द कराने के लिए कई महीनों पर्यन्त मौनपूर्वक तप व ध्यान किया जिसके प्रभाव

से पुजारी व वहाँ के आगवानों के विचारों में थोड़े-से उपदेश से ही परिवर्तन हो गया और वहां पर जोधपुर स्टेट द्वारा जीव-हिंसा बन्द करवा दी गयी।

इसी अरसे में आप बामनवाड़ाजी तीर्थ पधारे। वहाँ धर्मशाला के प्रवेश-द्वार के ऊपर के कमरे में खिड़की के पास रात्रि में ध्यान में लीन हो गये। उस रात्रि में अचानक कोई उपसर्ग हुआ जिससे गुरुदेव खिड़की से 15 फुट नीचे फुटपाथ पर गिर गये, जिससे मस्तक से खून की धारा बहने लगी। मंदिर की पेढ़ी के सेवकों को मालूम पड़ते ही वे दौड़े आए और गुरुदेव से पूछा। आप तनिक भी विचलित नहीं हुए और कहा—कुछ नहीं, ॐ शांति। उस समय आपके सिर पर पट्टी बाँधने व उपचार करने का कार्य कई महीनों पर्यंत धन्नारी वाले श्री पूजजी महाराज ने किया।

सं. 1975 से 1979 तक गुरुदेव ने मार्कंड आश्रम के सरस्वती मंदिर की गुफा में व उसके आसपास सतत मौन अवस्था में उग्र तपस्या व ध्यान किया। आप दिन-रात ध्यान में लीन रहते थे। समय मात्र भी प्रमाद व निद्रा में नहीं देखे गये। कभी पेंसिल तक भी हाथ में नहीं ली, न कोई लोहे की वस्तु (सुई तक) को ही स्पर्श किया। सिर्फ ध्यान-बल से ही आत्म-साक्षात्कार होने से गुरुदेव को सब ज्ञान संपादन हो गया। भूतकाल, भविष्य व वर्तमान में क्या हो रहा है उन घटनाओं को व जनता के मनोगत भावों को आप सहज ही में जान लेते थे। ध्यान-बल से आपको कई प्रकार की सिद्धियाँ भी प्राप्त हो गईं। इस समय आपकी सेवा में किवरली गाँव

के पंडित लक्ष्मीशंकरजी रहते थे, उन्हें भी गुरुदेव की सेवा में रहने के कारण कुदरती संस्कृत का ज्ञान हो गया और गीता आदि शास्त्रों के हजारों श्लोक आठ दिनों में ही कंठस्थ हो गये। गुरुदेव को सरस्वती सिद्ध हो गयी, जिससे बिना पढ़े ही आपको अनेक भाषाओं का ज्ञान हो गया। लक्ष्मीशंकरजी ने बताया कि गुरुदेव सरस्वती देवी की मूर्ति से वाद-विवाद किया करते थे। देवी सरस्वती धूपदानी में से प्रकट होती देखी जातीं व संभाषण में सूत्र उच्चारण करती थीं।

सं. 1977 के माघ मास में गुरुदेव शिवगंज पधारे थे। ध्यानस्थ दशा में रमण करते हुए एक दिन गोचरी लेने धनरूपजी नामक एक श्रावक के घर गये। गोचरी लेने के बाद आपकी दृष्टि उनके पुत्र सुकनराज पर गई और आपने पूछा— "इस बालक को क्या हुआ है ?" धनरूपजी बोले— "यह बहुत वर्षों से अपंग दशा में हैं।" गुरुदेव के रोम-रोम में करुणा का संचार हो गया और बोले— "ॐ शांति। ठीक हो जायगा" इसके पश्चात् सुकनराज बालक धीमे-धीमे चलने लग गया और फिर पूर्ण स्वस्थ होकर जीवन व्यतीत किया।

तीन-चार महीने बाद आप पोमावा गाँव पधारे। वहाँ पर सेठ रतनचन्द मनरूपजी को एक रात्रि में कोई दैवी-आभास हुआ और उनकी इच्छा गुरुदेव के चरणों में कुछ द्रव्य खर्च करने की हुई। उनकी माता व पत्नी ने भी वीसस्थानक की ओली के उजमणा करने की प्रेरणा दी। सं. 1978 के जेठ सुदी 11 के दिन उजमणा का उत्सव बड़े ठाठ-बाठ से किया गया। सेठ रतनचन्दजी की भावना

इतनी अधिक बढ़ गई कि जहाँ उनका विचार 5-6 हजार रुपये लगाने का था, उस जगह उन्होंने अपनी सारी पूँजी यहाँ तक कि गहने आदि बेचकर भी सब द्रव्य लगा दिया। दूसरे ही वर्ष चावल के व्यापार में नफे के रूप में उन्होंने दुगुना द्रव्य का उपार्जन किया।

सं. 1980 में गुरुदेव आबू गिरिराज की गुफाओं में ध्यान हेतु चले गये। कभी गुरु शिखर की गुफाओं में तो कभी अचलगढ़ की गुफाओं में: कभी वशिष्ठ आश्रम (गौमुख), कभी सफेद गुफा में तो कभी लाल गुफा में समाधिस्थ दशा में विराज जाते थे। अधर देवी के ऊपर का शिखर जिसे अभी 'शांति शिखर' कहते हैं, वहाँ लगातार मौनपूर्वक कई दिन-रात ठण्ड और जंगली जानवरों की बिना परवाह किये आप ध्यानमग्न रहते थे। एक चातुर्मास अर्बुद गिरि के आरणा नामक गांव में किया।

आरणा के बाद एक चातुर्मास वशिष्ठ आश्रम (गौमुख) में निर्गमन किया। वहाँ वर्षा काल में बहुत ही ठंड थी व बहुत ही वर्षा होती थी। कुहरा इतना रहता था कि कुछ भी दृष्टिगोचर नहीं होता था। इस कड़ाके की ठंड में भी गुरुदेव केवल कोपीन (लंगोट) पहिने हुए महीनों पर्यंत ध्यानमग्न रहे। ध्यान-समाधि में आप इतने लीन हो गये थे कि आप वहाँ मस्त हाथी की तरह विचरण करते प्रतीत होते थे।

सं. 1982 या (सन् 1925) का चार्तुमास सिरोही में व्यतीत किया। सं. 1984 (सन् 1927) के जेठ सुदी 7 को चामुण्डेरी ग्राम में जिन बिंब की प्रतिष्ठा व अंजनश्लाका गुरुदेव के करकमलों

द्वारा सम्पन्न कराई गई। उस समय वहाँ रु. 1,90.000/- जितनी बड़ी अकल्पनीय रकम की आमदनी मंदिर में हो गई और आसपास के गांवों का कलह और मनमुटाव मिटाकर आपने शांति स्थापित करवा दी। सं. 84-85 में सिरोही के ऋषभ देव जिनालय का ध्वजादंड समारोह आपके सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। यह ध्वजादंड भूमि से जरा भी ऊँचा उठता नहीं था तब आपने अपना ओघा छूकर ऊँचा उठाने का संकेत किया और तत्काल यह कार्य आसानी से सम्पन्न हो गया। सं. 1984 (सन् 1928) के फागुण सुदी 8 के दिन आपके गुरु मुनि श्री तीर्थ विजयजी का स्वर्गवास मुड़तरा गांव में हो गया।

''जन्म भूमि, जननी, जनक ,जगत् गुरु, जगदीश।
दुर्लभ पंच प्रकार हैं, इन्हें नमाओ शीश।।''

ज्ञान-प्राप्ति व लोकोपकार :

सं. 1985 (सन् 1928) का चातुर्मास आपने आरणा (आबू रोड़ और माउंट आबू के बीच में) में किया। गुरुदेव वहाँ किसी चट्टान पर बैठकर लगातार ध्यान-समाधि में रहते थे। ऐसा अनुमान है कि यहां पर आसोज मास में आपको पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति हुई। शास्त्रों में इसका 'प्रतिभाज्ञान' या 'अनुभव ज्ञान' नाम से उल्लेख है। इस प्रसंग पर देवों ने वहां के जिनालय में उत्सव मनाया, ऐसा एक भक्त से मालूम हुआ।

सं. 1987 ई. सन् 1930 के दिवाली के करीब माउंट आबू में ए.जी.जी. के पद पर सर जार्ज आग्लीव की नियुक्ति हुई।

वे गुरुदेव के पूर्ण भक्त थे। इनको कई वर्ष पूर्व जब वे साधारण पद पर थे गुरुदेव ने कह दिया था कि— ''तुम राजपुताना के एजेन्ट टु दि गवर्नर-जनरल बनोगे।'' इसी वर्ष महात्मा गाँधी ने सत्याग्रह किया जिससे जगह-जगह राजनैतिक कैदी पकड़े गये। भक्तों के पूछने पर गुरुदेव ने कई दिन पहले बता दिया था कि दिनांक 4-3-31 को गाँधीजी आदि छूट जावेंगे और अँग्रेज सरकार समाधान करने की घोषणा कर देगी। फलतः दिनांक 4-3-31 को गाँधी-इरविन पेक्ट की घोषणा हुई और राजनैतिक कैदियों को छोड़ दिया गया।

एक समय गुरुदेव के मन में यह बात उठी कि अपने ही धर्म मंदिरों के दर्शनार्थ यात्री आते हैं उनसे सरकार मूंडका-टैक्स लेती है जबकि टूरिस्ट, ईसाई एवं मुसलमानों से नहीं लेती, यह उचित नहीं है। देव-स्थानों पर से यह अन्याय दूर होना चाहिये। आपने संकल्प का वाइबरेशन द्वारा यह संदेश मौन रूप से ब्रह्मांड में प्रसारित कर दिया।

प्रारम्भ में कुछ वर्षों तक गुरुदेव अपने दर्शनार्थ आने वालों का ध्यान इस अनुचित मूंडका-टैक्स की ओर दिलाते थे किन्तु गुरुदेव ने अनुभव किया कि जैन समाज संगठित नहीं है और सत्याग्रह आदि किसी प्रकार का आन्दोलन करके मुंडका-टैक्स उठवा देने का साहस नहीं हैं। गुरुदेव जानते थे कि कुछ ही वर्षों में भारत स्वतन्त्र होने पर यह मुंडका-टैक्स उठ जायगा। जिससे अंतिम वर्षों में आप कहा करते थे कि अभी मूंडका दे दिया करो यदि मंदिर में

जाना हो। आखिर गुरुदेव के वाइबरेशन (Vibration) के परिणामस्वरूप भारत के स्वतंत्र होने पर यह टैक्स सब तीर्थ स्थानों से उठा दिया गया।

इसी प्रसंग पर शत्रुंजय (पालीताना) के टैक्स का भी स्मरण हो जाता है जिसका यहां पर किंचित् वर्णन किया जा रहा है :—

शत्रुंजय पहाड़ का पालीताना दरबार जैनियों की आणंदजी कल्याणजी पेढ़ी से सालाना टैक्स लेती थी। दरबार ने टैक्स की माँग बहुत बढ़ा दी जिसके विरोध में जैन समाज सत्याग्रह नहीं कर सका। जिससे असहयोग रूप से वि. सं. 1983 (सन् 1926 ई.) से शत्रुंजय पर जाना बन्द करके बाजू के पहाड़ कदंब गिरि पर ही भगवान् के दर्शनार्थ जाना तय किया। कई रजवाड़ों के नरेश गुरुदेव के भक्त थे। गुरुदेव के पास जब यह बात निकली तब पालीताना दरबार ने मंजूर कर लिया कि— गुरुदेव जितना फरमाँ देंगे उतने में मैं संतोष कर लूँगा। इस विषय का संदेश आबू पर आए श्रावकों में से श्री गुलाबचन्दजी ढड्ढा, कलकत्ता वाले बाबू बद्रीदासजी के पुत्र रायकुमारसिंहजी, आगरा वाले मोहनलालजी वैद आदि प्रतिष्ठित गृहस्थों ने आनन्दजी कल्याणजी पेढ़ी को भेजा कि शत्रुंजय तीर्थ के टैक्स बाबत का मामला गुरुदेव श्री शांतिविजयजी पर छोड़ देवें। किन्तु उस समय के कुछ प्रमुख आचार्यों की सलाह पर इस संदेश की अवहेलना करके (सन् 1928) वि.सं. 1985 के ज्येष्ठ मास में रु. 60,000/- (साठ हजार रुपये) वार्षिक टैक्स का दरबार को देने का पेढ़ी ने तय कर लिया। यदि गुरुदेव का हस्तक्षेप स्वीकार कर लिया होता तो समाज को बहुत लाभ हो गया होता।

सं. 1988 ई. (सन् 1931) के गुरुपूर्णिमा का समारोह माऊंट आबू में जोधपुर दरबार सुमेरसिंहजी की पुत्री (जयपुर की महारानी जी) की ओर से बड़े धूम-धाम से मनाया गया था। इसी वर्ष गुरुदेव के उपदेश से माऊंट आबू पर प्रदेश का पहला पशु चिकित्सालय (Guru Shri Shantivijay Animal's Hospital) खोला गया ताकि बीमार जानवरों को गोली से न मारा जाकर उनकी चिकित्सा की जावे। इसी वर्ष श्री दिग्विजयसिंह जी (दरबार जामनगर) आपके दर्शनार्थ आए। अमेरिकन लेखिका श्रीमती नीलाक्रेम कुक भी नवम्बर, 1931 में आपके पास आकर कुछ महीने रही, बाद में गाँधीजी के साबरमती व वर्धा आश्रम में रही। इन्होंने गुरुदेव के विषय में अपने दिव्य अनुभव करीब 36 पेज में लिखते हुए लिखा है— "Gurudeo is Guru God, Divine Guru"।

''भक्ति भजन भगवान का, सेवा आदर वैन।
निंदा ईर्षा त्याग कर, मग्न रहो दिन रैन।।''

अहिंसा का दिव्य संदेश व पोरवाल सम्मेलन :

सं. 1989 की ग्रीष्म ऋतु बामनवाड़ा तीर्थ में वास कर आप वर्षा काल में देलवाड़ा पधार गये। इस समय तक आपकी प्रसिद्धि संसार भर में हो गई थी। दशहरा के त्यौहार पर प्रत्येक नगर और गाँव के देवी मंदिरों में धर्म के नाम पर जीव-हिंसा होती थी, उसे रोकने के लिए गुरुदेव ने समस्त भारत के राजा-महाराजाओं

को संदेश भेजा इस संदेश का सब रजवाड़ों पर अपूर्व प्रभाव पड़ा और सैकड़ों नरेशों ने अपने-अपने राज्य में जीव-हिंसा बन्द करने की व्यवस्था की और यह शुभ समाचार उन्होंने तार और पत्रों द्वारा गुरुदेव को भेजे।

सं. 1990 के वैशाख वदि 1, 2, 3 के दिन पोरवाल महा सम्मेलन पर बामनवाड़ाजी में सम्मिलित होने के लिये आपको आमंत्रित किया गया। सम्मेलन की कार्यवाही दिनांक 11-4-1933 को शुरु हुई और तीन दिन चली। वहां श्रीविजयवल्लभ सूरिजी से आपका मिलन व विचार-विनिमय हुआ। इस सम्मेलन में जनता की ओर से बहुत आग्रहपूर्वक ''अनंत जीव प्रतिपाल योगेन्द्र चूड़ामणि राज राजेश्वर'' की उपाधि से योगिराज शांतिविजयजी को सम्मानित किया गया।

बामणवाड़ा पंचतीर्थी :

दिनांक 30-10-1933 (कार्तिक शुक्ल 12, 1990) को बम्बई निवासी सेठ गुलाबचंदजी राजाजी ग्राम दुजानावालों ने पंचतीर्थी संघ निकालने की इच्छा प्रकट की। गुरुदेव भगवान ने विनती स्वीकार कर दिनांक 2-11-1933 (कार्तिक शुक्ल 15, वि.सं. 1990) को चतुर्विद संघ सहित श्री बामणवाड़ा से विहार किया।

संघ नांदिया, लाज, लौटाना, दियाना, अजारी, मार्कण्डेश्वर, पिंडवाडा, झाडोली, अरासना होते हुए दिनांक 20-11-1933 (वि.सं. 1990, मिगसर शुक्ल 2) को वीरवाड़ा पहुँचा।

वीरवाड़ा में संघ का अन्न-जल त्याग :

इस समय तक गुरुदेव के देश-विदेश में हजारों भक्त हो गये थे, जो बारंबार दर्शनार्थ आते थे। कई राजा-महाराजा, पारसी, अँग्रेज, मुसलमान आदि भी गुरुदेव के दर्शनार्थ आते थे। गुरुदेव की दिव्य दृष्टि, विश्वप्रेम, मन के अंर्तद्वन्दों को जान कर शांति सुधा का पान कराने की अनुपम शक्ति जानकर सब योगीराज के परम भक्त बन गये थे। अतः सभी की भावना योगीराज को आचार्यपद से विभूषित करने की थी।

मार्ग में आचार्यश्री विजयमहेन्द्रसूरीश्वरजी, आचार्यश्री विजय गुलाबसोमसूरीश्वरजी, उपाध्यायश्री उद्योतविजयजी, पं. लब्धिसागरजी, मुनि मनहरविजयजी, मुनि मंगलचन्दजी और साध्वी श्री माणिकश्रीजी, श्री अमृताश्रीजी तथा श्रावक-श्राविका आदि चतुर्विद संघ की प्रबल इच्छा हुई कि योगीराज गुरुदेव को श्री जगत्‌गुरु सूरि (आचार्य) सम्राट की पदवी समर्पण कर कृत-कृत्य बने।

कुछ साल पहले भी रोहीड़ा ग्राम में श्री विजयकेसरसूरिश्वरजी के बहुत प्रार्थना करने पर भी गुरुदेव ने आचार्य पद ग्रहण करने से इंकार किया था। तीर्थयात्रा के दौरान ग्राम-ग्राम में सभाएँ करके संघ ने उपरोक्त पद अर्पण करना चाहा किन्तु गुरुदेव किसी तरह टालते रहे किंतु वीरवाड़ा ग्राम पहुँच कर संघ ने पक्का निश्चय कर लिया कि जब तक गुरुदेव 'आचार्य' पद ग्रहण नहीं करेंगे तब तक सब लोग अन्न-जल का त्याग रखेंगे। ऐसा करने पर भी योगीराज मना करते रहे। प्रातःकाल से अन्न-जल का त्याग करके सबको बैठे-बैठे 3 बज गये।

पच्चीसवें तीर्थंकर तुल्य श्री संघ द्वारा आचार्य पदवी समर्पित:

फिर यकायक संघ में जोश फैला और सबने एक मत होकर निश्चय कर लिया कि अब तो हम मिलकर जबरदस्ती योगीराज को आचार्य पद अर्पण करेंगे ही। उस समय गुरुदेव ग्राम के बाहर एक वृक्ष के नीचे ध्यानावस्था में थे। श्री संघ मंत्रणा करके गुरुदेव जहाँ विराजमान थे वहाँ आए और उत्कृष्ट भाव के आवेश में आकर ठीक 3 बज कर 15 मिनट पर पदवी समर्पण मानपत्र (केसर से लिखा) और चादर आग्रहपूर्वक अर्पण कर दी।

महाराज साहब ने फिर भी इंकार किया तब मुर्शिदाबाद निवासी बाबू जगपतसिंहजी दुगड़ आदि सज्जनों ने कहा कि तीर्थंकर भी संघ को 'नमो तिथस्स' करते हैं। आप संघ की आज्ञा कैसे टाल सकते हैं? श्री संघ पच्चीसवें तीर्थंकर के तुल्य हैं उसकी आज्ञा अनुसार आपको पद लेना ही पड़ेगा। इतना कहते हुए सब ने हर्षोल्लास के साथ जगत्गुरु सम्राट श्री शांतिसूरिश्वरजी महाराज की जय-जयकार के नारों से आकाश को गूंजायमान कर दिया। आखिर में योगिराज के पद ग्रहण करने के उपरांत ही संघ ने अन्न-जल ग्रहण किया। इसी पंचतीर्थी दौरान नांदिया, वीरवाड़ा और दुजाना ग्रामों के 50-50 वर्ष पुराने झगड़े आचार्यश्री के कर-कमलों द्वारा फैसला होकर शांति स्थापित हुई।

बामणवाड़ा में पदवी समर्पण महोत्सव :

दिनांक 20-11-1933 (वि. सं. 1990) रविवार के दिन ही आचार्य श्री विहार कर के वीरवाड़ा से बामणवाड़ा पधार गये।

वहाँ पर सेठ शिखरचंदजी रामपुरिया आये हुए थे। उनकी तथा संघपति और सकल संघ की ओर से तीन दिनों तक (दिनांक 21-11-1933 से 23-11-1933) बड़े आनन्द के साथ पदवी समर्पण के उपलक्ष्य में उत्सव मनाया गया। विधि-विधान की क्रिया दिनांक 21-11-1933, वि. सं. 1990, मागसर शुक्ल 3 को की गयी। श्री आचार्य सम्राट ने अपने श्रीमुख से दिव्य वाणी में पंचपरमेष्ठी का मांगलिक सकल संघ को सुनाया। ऐसा मालूम होता था कि मानो साक्षात् सरस्वती देवी श्री आचार्य के मुखारविंन्द से प्रकट हो रही हो।

गुरुदेव की केसरियाजी तीर्थ के लिये भीष्म प्रतिज्ञा :

आचार्य पद से विभूषित होने के कुछ समय पश्चात् उदयपुर राज्य में केसरियाजी तीर्थ के विषय में झगड़ा और तीव्र हो गया। तीर्थ की अशातना होने से जैन समाज को बहुत दु:ख हुआ–लेकिन किसी संस्था या जैनाचार्य ने कुछ भी नहीं कहा। आचार्य बनने पर जिन-शासन की जवाबदारी स्वत: ही आचार्य पर आ जाती है। यह ध्यान में रख कर गुरुदेव ने अखबारों द्वारा उदयपुर स्टेट को न्यायपूर्वक व्यवहार करने के विषय में ध्यान दिलाया। किन्तु उदयपुर स्टेट के मंत्री और पंडों ने इस पर ध्यान नहीं दिया।

श्री जवाहरलालजी लोढा; संपादक, 'श्वेतांबर जैन' आगरा दिनांक 8-12-1933 को श्री विजयशांतिसूरीश्वरजी के दर्शनार्थ व केसरियाजी तीर्थ के संबंध में कुछ प्रश्न पूछने की इच्छा से बामणवाड़ा पहुँचे। दिनांक 9-12-1933 (वि.सं. 1990) को

जब योगीराज बामणवाड़ा में व्याख्यान दे रहे थे तब लोढाजी पहुँचे और गुरुदेव से उन्होंने कुछ सवाल किये। लोढाजी का कहना था कि आप जैसे समर्थ महापुरुष कुछ नहीं करेंगे तो केसरियाजी तीर्थ जैनों का नहीं रहेगा। योगीराज ने प्रश्नों का जो उत्तर दिये वे इस प्रकार है :

प्रश्न-1 : महाराज ! श्री केसरियाजी तीर्थ की दशा आपसे छिपी नहीं है, इस मौके पर जगत आपकी ओर दृष्टि लगाये बैठा है। क्या आप बताने की कृपा करेंके कि इस तीर्थ के लिये आप क्या कर रहे हैं?

उत्तर : मैं इसके लिये कुछ कहना नहीं चाहता था परन्तु तुमने पुछा है तथा अखबारों में जो लेख आये दिन छप रहे हैं, उसके लिए तथा जगत को कुछ संतोष देने के लिए कहने की फर्ज बनी है कि तीर्थ के लिए जगत के कहने से नहीं मन, वचन और काया से ध्यान कर रहा हूँ।

प्रश्न-2 : दिनांक 8 दिसम्बर 1933 के जैन पृष्ठ 1127 में 'श्री केसरियाजी' शीर्षक द्वारा जो आप के ऊपर टीका टिप्पणी की गई है कि श्री शांतिविजयजी वगैरह "केटलाक तो शांति छोड़ी कोई पण बीजे पगलुं भरवा ना पाडी रह्या छे" तो क्या आपकी राय में केवल शांति रखने से ही तीर्थ का काम बन जायेगा?

उत्तर : प्रेम से सब निकट है। उदयपुर के महाराणाओं और जैनियों के बीच पुरातन काल से सम्बन्ध चला आ रहा है और वर्तमान

महाराणा श्री भोपालसिंहजी का जैन और विशेषकर मेरे साथ उनका बहुत-सा प्रेम है। उदार हृदयवाले महाराणाओं के द्वारा की गई जैन तीर्थ और हमारे गुरुवर्यों की सेवाओं को हम नहीं भूल सकते हैं। हमारा आत्मविश्वास है कि श्री केसरिया तीर्थ का झगड़ा शीघ्र व शांति से निबटेगा।

प्रश्न-3 : आपका फरमाना यथार्थ है। उदयपुर के महाराणाओं से जो हमारी कौम का जो सम्बन्ध चला आ रहा है उस प्रेमभावना को जैन समाज कदापि तोड़ना नहीं चाहता है। हम तो महाराणा को अपना ही नहीं, सारे हिंदू का सरताज और हिन्दु कुल का सूर्य मानते हैं। किन्तु जहां तक खबर मिली है उससे मालूम होता है कि सर सुखदेव प्रसादजी उनके राज्य के कर्ताधर्ता रहे हैं और वह पण्डों का पक्ष ले रहे हैं तो पंडितजी के लिये आपका क्या ख्याल है?

उत्तर : सर सुखदेव प्रसादजी पहले हमको मिले हुए हैं और मेरे ऊपर प्रेम हैं। जोधपुर राज्य के जसवंतपुरा में जब मेरा जाना हुवा था तब वह जोधपुर के प्राईम मिनिस्टर थे। वहां उन्होंने जो भक्ति दर्शायी थी वह अवर्णनीय है। इस हिसाब से मुझे उनको कहने का हक है कि इस झगड़े का निष्पक्षता से निबटारा कराके दोनों पक्षों को संतोष करवा दे और अपनी अंतिम अवस्था में यह शुभ काम अपने हाथ से करवाकर लाभ लेते जाएँ वैसी मेरी भावना है। फिर तो उनके उदय में होगा वैसा होगा।

प्रश्न-4 : आपका फरमाना यथार्थ है परन्तु समाज कब तक शांति पर विश्वास धारण कर बैठा रहेगा?

उत्तर : मैं इस विषय पर सतत ध्यान दे रहा हूँ। मेरा संकल्प है कि फाल्गुन शुक्ल 13 तक यह कार्य हो जाय।

प्रश्न-5 : इस अवधि तक अगर काम का निपटारा नहीं हुआ तो क्या आप आगे कदम बढायेंगे और पूर्वाचार्यों की भांति कोई उदाहरण सामने रखेंगे?

उत्तर : जब हम उसी विषय का सतत ध्यान कर रहे हैं तो क्यों न हो? हमें तो आत्मविश्वास है कि शांति से ही पूर्ण सफलता मिलेगी।

अंत में गुरुदेव ने विश्व-प्रेम की भावना से और किसी भी प्राणी के प्रति वैरभाव की वृत्ति नहीं रखते हुए सभा में केसरियाजी तीर्थ के लिये उद्घोषणा की कि यदि केसरियाजी तीर्थ के विषय में जैनों और पंडों के बीच के झगड़े का मेवाड़ स्टेट की तरफ से शांतिपूर्ण ढंग से निर्णय नहीं हुआ तो मैं वि. सं. 1990 के फाल्गुन शुक्ल 13 (दिनांक 27-02-1934) के दिन मेवाड़ की सीमा में प्रवेश करके आमरण अनशन (उपवास) शुरु करुँगा।

ये समाचार अखबार में प्रकाशित होते ही उदयपुर के महाराणा भोपालसिंह पर देशी रजवाड़ों के तार आदि संदेश आने लगे कि योगीराज के उपवास शुरु करने के पहले ही शांति स्थापित कर दें।

लींबड़ी नरेश ने तार से गुरुदेव को इतला की कि पालनपुर में कुछ राजाओं की एक सभा हुई जिसमें उन्हें उन सब की तरफ से प्रतिनिधि के रूप में उदयपुर महाराणा से मिलकर समझौता करवाने

का निर्णय लिया है। परन्तु गुरुदेव ने उनसे ऐसा करने को मना कर दिया। बीकानेर दरबार की ओर से एक लम्बा तार मिला जिसमें उन्होंने मध्यस्थता के लिये प्रस्ताव किया और गुरुदेव से प्रार्थना की कि वे इसके लिए अनशन पर न जाएँ। गुरुदेव ने सब को एक ही जवाब भेजा कि इसमें किसी की मध्यस्थता की जरुरत नहीं है।

ओगिल्वी और जयपुर दरबार ने दिल्ली में महाराणा उदयपुर से हुई मुलाकात में उनको समझौते के लिये सलाह दी। गुरुदेव ने स्वयं महाराणा को यह संदेश भेजा कि जैनियों के युगों पुराने विशेषाधिकारों और केसरियाजी के मंदिरों में उनके द्वारा पूजा की स्वतंत्रता को बनाये रखना उनका कर्त्तव्य है। परन्तु इन सब का कोई असर नहीं हुआ। सर सुखदेव प्रसाद उदयपुर के आला मुसाहिब थे। अन्तिम तारीख नजदीक आने पर गुरुदेव ने सेठ चेनकरण और चंपकलाल भाई को आगे से उदयपुर भेज दिया। जब राज्य सरकार को इस बारे में पता चला तो उन्होंने गुरुदेव के उदयपुर में प्रवेश को रोकने के लिए कठोर कदम उठाये। सीमा पर सशस्त्र पुलिस का पहरा लगवा दिया। ढ़ढ़ाजी के अनुसार गुरुदेव को गिरफ्तार कर के घने जंगल में ले जाकर हाथ-पैर बाँध कर शेरों के लिए शिकार बनाने की गुप्त योजना बनाई गई। उनके जीवन के विरुद्ध अन्य योजनाएँ भी बनाई गई। परंतु वे सब विफल हो गई।

जोधपुर और सिरोही रियासतों को सूचना भेजी गई कि वे विशेष रेलगाड़ियाँ नहीं जाने दें, क्योंकि उससे उपद्रव पैदा होगा। विशेष रेलगाड़ियाँ योजना के अनुसार चली। इस आंदोलन के

प्रमुख नेताओं की सूची बनाकर दी गई जिसमें उन्हें गुण्डों की तरह दर्शाया गया। इस प्रकार सब तैयारियाँ हो चुकी थी। परन्तु न्यायिक अफसरों ने योगीराज को गिरफ्तार करने के आदेश पर आपत्ति की। जब तक किसी प्रकार का उपद्रव वास्तव में नहीं होता। इस प्रकार यह सब योजना रद्द हो गई।

उस समय बीकानेर दरबार सर गंगासिंहजी ने भी अपनी तरफ से बहुत प्रयत्न किया और उदयपुर महाराणा को संदेश भी भेजा। उन्होंने तो यहां तक कहा कि यदि वे नहीं माने तो मैं वाइसरॉय के यहाँ जाकर अपील करुँगा। अन्यथा मैं विलायत जाकर प्रिवी काउन्सिल में अपील करुंगा। किन्तु गुरुदेव ने कहा कि मुझे कोई सहायता की आवश्यकता नहीं है। मैंने अपने आत्मबल के भरोसे ही तीर्थ की रक्षा का भार उठाया है।

चंपकभाई लिखते हैं कि, ''मुझे इस समय कोई काम से अजमेर जाना पड़ा वहां मैं ए.जी.जी. ऑगिल्वी साहब से मिलने गया। एक घंटे तक मेरी उनसे बात चलती रही। श्री योगीराज के आमरण उपवास की प्रतिज्ञ से वे बहुत ही फिक्र में थे और इसलिये उन्होंने सिरोही जाने के लिए आफिस का काम निकालकर बीच में रुककर श्री योगीराज के दर्शन करने का निश्चय किया हुआ था जो उन्होंने मुझे बताया। उन्होंने श्री योगीराज को कुछ संदेश मेरे साथ भेजा। जिस रोज वे सज्जनरोड़ (वर्तमान में सिरोही रोड़) पहुंचने वाले थे उन से सैलून में मिलने की सूचना उन्होंने मुझे दी। मैं दूसरे ही दिन सुबह बामणवाड़ा आ गया और सारी हकीकत श्री योगीराज को कही। ओगिल्वी

साहब जब सज्जनरोड़ आये तब मैं उनसे उनकी सैलून में मिला। उनके साथ चाय वगैरह पीकर मोटर में बैंठकर उनके साथ बामनवाड़ा आया। सिरोही दरबार तथा दीवान साहब बामणवाड़ा एक घन्टे ठहरें। ओगिल्वी साहब ने श्री योगीराज के साथ एक घन्टे तक एकांत में बातचीत की थी। सिरोही से लौटते हुए भी वे श्री योगीराज से मिल कर गये थे।''

गुरुदेव का उदयपुर की तरफ प्रस्थान :

उन दिनों उदयपुर के मुख्यमंत्री तो पं. धर्मनारायणजी थे, किन्तु उनके पिता सर सुखदेव प्रसादजी आला मुसाहिब की इच्छा अनुसार ही कार्य संचालन होता था। सर सुखदेव प्रसादजी ने यह फरमान जारी कर दिया कि यदि योगीराज शांतिविजयजी उदयपुर की सीमा में प्रवेश करें तो अविलंब बंदी बना लिया जाय। उन्होंने उदयपुर राज्य की सीमा पर सब तरफ पुलिस तैनात करवा दी।

दिनांक 20 फरवरी 1934 (वि.सं. 1990, फाल्गुन शुक्ल 7) को 4 बजे गुरुदेव ने बामणवाड़ा से विहार किया। गुरुदेव के साथ उदयपुर जाने के लिये हजारों की संख्या में भक्तगण एकत्रित होगये थे। गुरुदेव ने सबको अपने-अपने स्थान पर लौट जाने का उपदेश दिया। यह दिन जैन धर्म के इतिहास में सबसे स्मरणीय दिन रहेगा। पालनपुर नवाब योगीराज के दर्शन करना चाहते थे। अत: योगीराज को सज्जनरोड़ पर ठहरने की विनती के लिये पालनपुर नगर से मेहता चिमनलाल और मंत्री खोड़ीदास को अग्रिम भेजा ताकि वाइसरॉय से मिलने के लिये दिल्ली जाते हुए योगीराज के

दर्शन कर सकें। योगीराज ने साफ इंकार कर दिया और कहा कि अब उनके लिये कार्यक्रम बदलना संभव नहीं है। एक घंटे तक विचार-विमर्श होता रहा जिससे योगीराज के खाना होने में कुछ देर हो गयी। इस प्रकार 5 बज कर 15 मिनट पर योगीराज अपने कमरे से उतर कर आये और बहुत उत्सुकता से खड़े भक्तों को दर्शन दिये। गुरुकुल के लगभग 60 लड़कों ने, जो केसरिया साफे बांधे और ओढणिया ओढ़े अनेक महिलाओं ने ढोल ढमाकों और 'सद्गुरुदेव की जय' के उद्घोष के साथ उनका स्वागत किया। उन्होंने मंदिर में जाकर दर्शन किये और फिर अपने पवित्र संदेश के पथ पर झंडों, बाजो, नर-नारी के आगे आगे चल पड़े। योगीराज को आठ बजे ध्यान में बैठना था, लेकिन पिण्डवाड़ा के लोगों ने उन्हें पिण्डवाड़ा में ठहरे बिना जाने नहीं दिया। वरकाना के रावजी योगीराज के साथ गये। झाड़ोली के पास आते-आते सूर्यास्त होने लगा था इसलिये रात ग्राम के बाहर शिव मंदिर में बिताई।

दिनांक 21-2-1934 (शुक्ल 8) को सुबह झाड़ोली से विहार किया। रास्ते में एक रात सिरोही दरबार के भाई ने भक्ति निमित्त पिण्डवाड़े में रोका।

दिनांक 22-2-1934 (शुक्ल 9) को अजारी पहुँचे और दिनांक 25-2-1934 (शुक्ल 12) तक गुरुदेव सरस्वती आश्रम मार्कण्डेश्वर में विराजे।

दिनांक 26-2-1934 (शुक्ल 12) की सुबह 5 बजे 150 भक्तों के साथ पहाड़ी रास्ते से उदयपुर जाने के लिये विहार किया।

करीब 1 मील चलने के बाद उन्होंने भक्तों को मांगलिक सुना कर लौट जाने को कहा। भक्तों के खूब आग्रह से डोली में बैठ कर जाने की विनती स्वीकार की। किन्तु भक्तों की नजर पहुँचे उतनी दूर तक आप डोली में विराजे। डोली वाले आदमियों को एक स्थान पर ठहरने के लिए कहकर केवल उदयपुर की तरफ निकल पड़े। इन स्वयं सेवको ने पट्टे और चपरास पर गुरुदेव शांतिसूरीजी के स्वयं सेवक होना लिखा था।

मेवाड़ की सीमा पर पुलिसवालों ने स्वयं सेवकों को देखा पर उनके पट्टे चपरास आदि पुलिसवालों को दृष्टिगोचर नहीं हुए जिससे वे धीरे-धीरे उदयपुर राज्य में निर्दिष्ट स्थान पर पहुँच गये। दिनांक 26-2-1934 को कई भक्त लोग एरनपुरा से रवाना होकर तीन विशेष रेलगाड़ीयों द्वारा उदयपुर की ओर निकल पड़े।

गुरुदेव मदार गाँव में अचानक प्रकट :

इधर सीमा पर सख्त पहरा था और सीमा पर आने वाले प्रत्येक जैन साधु को पुलिस रोक कर पूछताछ करती थी। कई बार ऐसा होता है कि पुलिस जिस संत का पीछा करती वह गायब हो जाता था और कभी जानवरों के रूप में बदल जाता था।

दिनांक 26-2-1934 को मार्कण्डेश्वर से प्रस्थान कर दिनांक 27-2-1934 (फाल्गुन शुक्ल 13) को मदार में प्रकट हुए। मदार गाँव उदयपुर-केसरियाजी के बीच गोगुन्दा मार्ग पर स्थित है। मदार गाँव उदयपुर से 18 कि.मी. पर है। रेल्वे द्वारा एरनपुरा से उदयपुर

230 कि.मी. की दूरी पर है। रास्ते में पंडित सुखदेव प्रसादजी की उदयपुर राज्य स्थित जागीर में उनके कुटुम्ब को दर्शन भी दिये थे। एक दिन में करीब 100 मील जितनी दूरी तय करना बिना योग-विद्या के असंभव है ?

मदार गाँव में गुरुदेव विरधीचंद तलसेरा नामक एक जैन-गृहस्थ के छोटे मकान की मेढी में रुके। मकान छोटा था व मेढी भी छोटी थी। गुरुदेव के मदार में अचानक प्रकट होने के समाचार बिजली की तरह मेवाड़ में सर्वत्र फैल गएं और हजारों की संख्या में भक्तगण जमा होने लगे। दर्शन के लिए मुश्किल से एक मिनट का समय मिल सकता था। लोग चढ़ते और दर्शन करके उतर आते थे।

गुरुदेव अनशन के पथ पर :

दिनांक 28-2-1934 (फाल्गुन शुक्ल 14) से गुरुदेव ने उपवास की शुरुआत कर दी। गुरुदेव ने यह भी ऐलान करवा दिया था कि केसरियाजी के विषय में जनता के हित की दृष्टि से कुछ भी विज्ञप्ति जारी की जायेगी जो चांदा निवासी श्री चैनकरण जी गोलेच्छा ही जारी करेंगे। उनकी विज्ञप्ति इस प्रकार है :

(1) आचार्य भगवान श्री विजयशांतिसूरीश्वरजी महाराज साहब फाल्गुन शुक्ल 14 तारीख 28-2-34 तक उदयपुर के सरहद में पधारेंगे। (2) हिज हाईनेस महाराणा साहब और हिज होलीनेस जगत गुरु श्री विजयशांतिसूरिश्वरजी महाराज साहब के बीच खानगी फैसला है। धर्म का सवाल है इसीलिए इस फैसले के बीच कोई भी

भाई या बहन न आये, शांति से रहे। गुरुदेव और महाराणा साहब का पुराना सम्बन्ध है। (3) केशरियाजी के विषय में उदयपुर जाकर किसी भी किस्म का प्रोपेगण्डा हैण्डबिल द्वारा या लेकचर द्वारा कोई भी महाशय न करे, अगर करेंगे तो वे भक्त नहीं होंगे और उसके जवाबदार वे स्वयं होंगे (4) कोई भी जाहिर पेपरों में असभ्य भाषा का उपयोग न करें अगर कोई भी करेंगे तो उनके जवाबदार वे स्वयं रहेंगे। (5) गुरुदेव के साथ कोई भी उपवास तथा अन्य व्रतादि न करे तथा किसी वस्तु का त्याग न करे। (6) गुरुदेव को तो विश्व प्रेम है। दोनों पक्षों को शांति हो यह उनकी धारणा है। (7) चैनकरण जी गोलेच्छा बांदा (सी.पी.) के हस्ताक्षरों की सही का जो लेख प्रकाशित हो वो आचार्य भगवान के समझे जाये। (8) बम्बई समाचार दिनांक 14-2-1934 पृष्ठ पाँच पर जैन चर्चा के लेख में किसी जैन ने लेख दिया है कि जगद्गुरु के साथ पांच संस्था प्रस्तुत विषय में कार्य कर रही है। लेकिन गुरुदेव का तो पहले ही से फरमान है और आज भी दुबारा फरमान करते हैं कि इस कार्य हेतु गुरुदेव को किसी प्रकार के साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका की सहायता की जरुरत नहीं है। यह कार्य आपने अपने स्वयं के मनोबल पर किया है। (9) सत्याग्रह शब्द बहुत से महाशय इस कार्य के लिए काम में लाते है तो यहां सत्याग्रह करने की कोई आवश्यकता नहीं है, यहां धर्म का सवाल है। (10) इस वक्त यह प्रश्न कौम का नहीं है सिर्फ गुरुदेव और महाराणाजी के आपस का सवाल है। (11) गुरुदेव के दर्शनार्थ जो स्पेशल ट्रेन ऐरनपुरा उदयपुर को तारीख 26-2-34 को खाना होने वाली थी, वो फिलहाल बन्द कर दी

गई है। सब भक्त, हाल में गुरुदेव के दर्शनार्थ उदयपुर न आयें। (12) गुरुदेव भगवान ने अपने साथ उदयपुर आने को सबको मना किया है। आप स्वयं अकेले पधारेगें।

एक शांतिविजय की जगह हजारों शांतिविजय :

उदयपुर राज्य ने गुरुदेव पर यह आरोप लगाया कि वे जनता को उत्तेजित कर राज्य की शांति भंग करना चाहते हैं, अतः गुरुदेव के विरुद्ध वारंट जारी कर दिया गया था हालाँकि यह फरमान दिनांक 25-2-1934 (फाल्गुन शुक्ल 11) को वापस ले लिया गया था।

सुखदेव प्रसादजी व अन्य अफसरगण इस आरोपवाली फाइल को लेकर उपवास के 2 दिन व्यतीत होने पर दिनांक 2-3-1934 (चैत्र कृष्ण 1) को गुरुदेव के पास मदार गाँव पहुँचे और विनयपूर्वक दण्डवत् प्रणाम कर के धीरे से अर्ज की कि मैं आपका पुराना शिष्य हूँ। जसवन्तपुरा परगने में मैंने आपके दर्शन किये थे। ऐसी धर्मशाला में ठहरना आपको शोभा नहीं देता। आप उदयपुर राज्य के भव्य महल में पधारिये। राज्य की ओर से सारी व्यवस्था कर दी जायेगी तथा केसरियाजी तीर्थ के लिये भी उचित व्यवस्था कर देंगे। इतना सुनकर योगीराज की आँखें लाल हो गई। श्री गुरुदेव सिंह की भाँति गर्जना करते हुए बोले, ''मुख में राम बगल में छूरी जैसी तुम्हारी कपटपूर्ण क्रियाएँ मुझ से छिपी नहीं है। तुम्हारे गुरु को कोई ठहरने की जगह दे, वह दोषी है; अन्न-जल बोहरावे वह भी दोषी है। स्टेट की सीमा में प्रवेश करने पर प्रतिबन्ध लगाने वाले और वारंट

निकालने वाले स्वयं तुम ही तो हो। पिछोला सरोवर का ठण्डा पानी पीओ तथा सुन्दर महलों में रहो। तुम्हारे गुरु के लिये उपरोक्त प्रबन्ध किया है। इससे ज्यादा और क्या भक्ति हो सकती है?''

''तीन दिन तक पुलिस आदि अधिकारी वर्ग को व्यर्थ कष्ट दिया। अब मैं आपके समक्ष हाजिर हूँ आप मुझे जेल में डाल सकते हैं। यदि मुझ पर गोली चलाना चाहे तो भी सीना खुला है। गोली चला कर देखें, एक शांतिविजय की जगह हजारों शांतिविजय उत्पन्न हो जायेंगे। यह सुनकर सुखदेवप्रसादजी स्तब्ध रह गये।''

गुरुदेव के जीवन-चरित्र में इस तरह का यह एक ही संबोधन सुनने में आया है। इसके बाद उन्हें बोध वचन देते हुए कहा ''जीवनकाल में सत्य की पहचान करना सीखना चाहिये। जीवन का कोई भरोसा नहीं है। आपकी उम्र तो पक गई है, यानि जीवन के किनारे पर पहुँच गये हैं। केसरियाजी तीर्थ के विषय में आपको न्याय की दृष्टि देखकर शांति स्थापित करनी चाहिये।''

अनशन स्थगित व गुरुदेव का छाछ ग्रहण करना :

गुरुदेव के बोध वचनों को सुनकर दीवानजी स्तब्ध होकर विचार में पड़ गये। थोड़े दिनों में मंदिर की समुचित व्यवस्था करके शांति स्थापित कर देने का वचन दिया। उन्होंने तब तक अनशन स्थगित करने हेतु गुरुदेव से प्रार्थना की। गुरुदेव ने पंडितजी की प्रार्थना को मान दे कर केवल छाछ ग्रहण करना स्वीकार किया।

इधर अधिकारी वर्ग लौटा तो वे गुरुदेव के विरुद्ध तैयार की गई फाईल को गुरुदेव के पास ही भूल गये। गुरुदेव ने फाइल को

चैनकरण जी गुलेच्छा के पास सुरक्षित रखवा दी। अधिकारीवर्ग जब फाइल को ढूंढने के लिये गुरुदेव के पास आये तो गुरुदेव ने फाइल दिलवा दी। फाइल पाकर अफसर लोगों को भान हुआ कि यह तो कोई पहुँचे हुए महात्मा है।

अनशन फिर शुरु :

गुरुदेव दो दिन तक केवल छाछ पर रहे। इस अरसे में समाधान की कोई संभावना न देखकर वापस उपवास शुरु कर दिये। उधर पं. सुखदेव प्रसाद जी जब घर पहुँचे तो बुखार हो गया, जो निकाला में परिणित हो गया। उन्हें चक्कर आने लगे और हालत बिगड़ गई। तब किसी ने सुझाव दिया कि आपने महात्मा पुरुष की अवहेलना करके उन्हें भारी कष्ट दिया है। अब उनके आर्शीवाद से ही शांति मिल सकती है। उनके पुत्र पं. धर्मनारायणजी ने भी गुरुदेव से आर्शीवाद लेने की राय प्रकट की, जिससे उन्हें गुरुदेव के पास संदेशा देकर भेजा गया। गुरुदेव धर्मनारायणजी के घर गये और आशीर्वाद देते हुए कहा कि आपके आयुष्य में अब कुछ महीने ही शेष है। अत: दुनिया की भलाई करके आत्मा का कल्याण करना चाहिये। धर्मनारायणजी की पत्नी गुरुदेव की भक्त बन गयी।

गुरुदेव को जहर देने की योजना :

अनशन के छठ्ठे दिन एक डाक्टर गुरुदेव के पास आया। कमरा भक्तों से भरा हुआ था। गुरुदेव ने प्रेमपूर्वक उसको बुलाया और अपने पास बिठाया। बाकी लोगों को बाहर जाने का संकेत दिया गया। डाक्टर सुखदेव प्रसाद का मित्र था और उसे गुरुदेव को

जहर देने के वास्ते भेजा गया था। रास्ते में वह पेड़ से टकराया और सर से खून निकलने लगा। फिर उसने पूरी बात बतायी। गुरुदेव ने उसे आर्शीवाद दिया और वह गुरुदेव का भक्त बन गया।

मैं बारह साल तक सिर्फ हवा में रह सकता हूँ :

ज्यों ज्यों उपवास के दिन निकलते जा रहे थे त्यों-त्यों भक्तों की चिंता बढ़ती जा रही थी। उम्मेदराज जी लिखते हैं कि सताइसवें दिन मेरी और केशवलालभाई गुण्टाली के उपस्थिति में गुरुदेव ने इसका निराकरण किया और कहा ''मेरे लिये चिंता मत करो, मैं सिर्फ हवा पर बारह वर्ष तक जीवित रह सकता हूँ।

मदार गाँव में हज़ारों लोग रोज दर्शनार्थ आते थे। गोड़वाल से पांच स्पेशल ट्रेन से भक्तगण आये थे, जिसमें एक ट्रेन भोली माँ आहोर वालों की थी और दूसरी ट्रेन सिरोही स्टेट की तरफ से थी। गुरुदेव सभी को दर्शन दे कर शांति और विश्वप्रेम का उपदेश देते तथा मदिरा मांस का त्याग करवाकर सन्मार्ग पर चलने का कहते।

सूर्यवंशी राजा के हाथों गुरुदेव का मोतीमहल में पारणा

दिनांक 29-3-1934 (वि. सं. 1991, चैत्र शुक्ल 13) को गुरुदेव के उपवास का 30 वां दिन था। उस दिन आप उदयपुर के पास देवली नामक गाँव में अपने आत्मबल से प्रभात काल में पधारे थे। उसी दिन महाराणा को कोई प्रेरणा हुई। जिससे वे गुरुदेव को उदयपुर में मोतीमहल (फतेहसागर झील के किनारे) नामक भवन में मिलना चाहते थे। गुरुदेव ने संदेश भेजा। ''मेरी तबीयत ठीक नहीं है यदि मिलना चाहते हो तो बोर्डिंग हाउस में मिलें न कि मोतीमहल में।''

महाराणा ने बोर्डिंग हाउस में मिलने की इच्छा व्यक्त की और पुलिस बंदोबस्त किया व पानी का छिड़काव भी किया गया। मिलने के समय से दस मिनट पहले गुरुदेव खुद मोतीमहल पहुंच गये, साथ में सैंकड़ों लोग थे। इधर महाराणा बोर्डिंग हाउस पधारे और फिर मोतीमहल गये। गुरुदेव व महाराणा ने करीब सवा घंटे तक अकेले में बातचीत की।

गुरुदेव ने धर्मलाभ देकर कुछ उपदेश दिया और कहा कि, ''आप भी केरसिया बाबा के भक्त हैं। मैं तो इतना ही कहता हूँ कि आप सत्य के रास्ते पर चलें, न्याय की दृष्टि से देखें और शांति की स्थापना करे।'' मैं जैनों का पक्षपात नहीं करता और न वैष्णवों के प्रति मेरा कोई द्वेष है। हमारी भावना तो प्राणीमात्र के कल्याण के लिए है। शांति की स्थापना करना ही हमारा मुख्य ध्येय है।

महाराणा ने गुरुदेव को वचन दिया कि मैं शीघ्रातिशीघ्र श्री केसरियाजी तीर्थ के विषय में न्याय कर दूँगा। आप मुझ पर विश्वास रख कर पारणा कीजिए।

महाराणा के वचनानुसार गुरुदेव ने उपवास तोड़ना मान लिया और महाराणा व महारानी (खुडाला ठाकुर की कुंवरी) के हाथों मोतीमहल में खीर ग्रहण करके पारणा किया। (खीर राजमहल में तैयार करके महाराणा साथ में लेकर पधारे थे।) पिछले सैकड़ों वर्षों में यह प्रथम प्रसंग है कि किसी जैन साधु को सूर्यवंशी महाराणा ने अपने हाथों से आहार दिया हो। एकत्रित जनसमुदाय आनंदित हो उठा और गुरुदेव का उदयपुर में अभूतपूर्व स्वागत किया गया।

इस खुशी के उपलक्ष में आनंदचंदजी सीपाणी कलकत्ता वालों ने सोने की गिन्नियों की एवं श्री हीराचंदजी गुलेच्छा ने रुपयों की उछाल की थी।

महाराणा की घोषणा :

महाराणा ने एक तटस्थ अंग्रेज जज को केसरियाजी तीर्थ के विषय में न्याय देने हेतु नियुक्त किया। थोड़े ही समय बाद उदयपुर महाराणा की तरफ से यह घोषणा करवा दी गई थी कि केसरियाजी तीर्थ जैनियों का है। और इस तीर्थ पर जैनियों के अलावा किसी और का हक नहीं है।

इस केस में डा. जयकर और सर तेज बहादुर सप्रु वकील थे। स्मरण रहे कि केसरियाजी तीर्थ के विषय में वैष्णव सम्प्रदाय का कहना था कि हमारे भी चौबीस अवतार हुए हैं और आठवें अवतार ऋषभदेव का है, किन्तु इन दावों का खंडन एक ही बात से हो गया। गुरुदेव ने बताया कि महाराणा फतेहसिंहजी द्वारा प्रकाशित सरकारी विज्ञप्ति में वर्णन है कि ऋषभदेव भगवान के जन्मदिन चैत्र कृष्ण 8 को केसरियाजी में भगवान के अमुक आंगी पहनाई जायें। इस तिथि और आंगी का किसी और संप्रदाय से कोई नाता नहीं है। वास्तव में श्री केसरियाजी तीर्थ जैन श्वेतांबरों का है परन्तु इस में ब्रिटिश सरकार का भी हस्तक्षेप था। क्योंकि सन् 1914 की लड़ाई में इंदौर के श्रीमंत सेठ हुकमीचन्दजी ने ब्रिटिश हुकूमत को बहुत सहायता की थी इसी कारण इस तीर्थ में श्वेताम्बर व दिगंबर दोनों का हक रखा गया है।

गुरुदेव का उदयपुर में निवास :

पारणे के दिन ही योगीराज का उदयपुर शहर में प्रवेश-महोत्सव बहुत धूमधाम से मनाया गया। शहर को खूब सजाया गया। जुलूस में हाथी-घोड़ा आदि के प्रबन्ध किये गये। गुरुदेव उदयपुर

में जैन बोर्डिंग हाउस के पास लक्ष्मी निवास में ठहरे हुए थे। वहां पर महाराणा दो बार गुरुदेव से मिलने आये थे। मोतीभाई के अनुसार महाराणा और महारानी गुरुदेव के पक्के भक्त बन गये। हम लोग उन्हें प्रसाद भेजते थे और महाराणा हमे एकलिंगजी का प्रसाद भेजते थे। सब तरह के लोग गुरुदेव के दर्शनार्थ आते थे। गुरुदेव भी सब मंदिर में दर्शन करने गये। जिसमें शिवमंदिर, जगदीश मंदिर मुख्य हैं। सब लोग गुरुदेव की जय जयकार करते थे।

1991 की माघ सुदी पंचमी पर बामनवाड़ाजी में गुरुदेव के कर कमलों द्वारा जिन बिंबों की अंजनशलाका आदि समारोह सम्पन्न कराया गया। इस अंजनशलाका में पार्श्वनाथ स्वामी का एक सहस्त्र फणा जिन बिंब था जिसके पाषाण पर काले छींटे थे। गुरुदेव ने कहा था पीछे से यह चिह्न मिट जावेंगे। तदनुसार वे छींटे पीछे से मिट गये और नेत्रों से अमी झरने लग गया। ऐसे प्रभावशाली बिंब को आगे सं. 1995 के मिंगसर मास में उम्मेदपुर के जिनालय में गुरुदेव द्वारा प्रतिष्ठित कराया गया।

''आदिनाथ को इष्ट है, वीर धर्म को नेम।
दृढ़ता अपने धर्म में, सारे जग से प्रेम।।''

युग-प्रधान पदवी :

बीसलपुर (जवाई बांध स्टेशन के पास) गाँव के जिन मंदिर में सं. 1992 के वैशाख सुदी 10 के दिन गुरुदेव के कर-कमलों से अंजनशलाका व प्रतिष्ठा करवाई गयी। प्रतिष्ठा महोत्सव में गुरुदेव के पधारने के समाचार प्रकट होने से करीब 20-25 हजार जन-समुदाय बाहर से आ गया। ग्रीष्म ऋतु में मारवाड़ में पानी की कमी

रहती है, जिससे इतने जन-समुदाय की आवश्यकता की पूर्ति होना असम्भव-सा प्रतीत होता था। किन्तु गुरुदेव लब्धि-सम्पन्न थे। आपने आशीर्वाद दिया जिससे सब काम आनंदपूर्वक एवं निर्विघ्नतया सम्पन्न हो गया। कुओं और बेरों से पानी के अटूट स्रोत फूट पड़े और किसी वस्तु की कमी न रही।

इसी अवसर पर अखिल भारतवर्षीय जैन श्वेतांबर कॉन्फरेंस का वार्षिक अधिवेशन भी गुरुदेव की छत्र छाया में हुआ जिसमें जैन समाज के प्रतिष्ठित व्यक्ति, जोधपुर स्टेट के उच्च अधिकारी व कांग्रेसी नेता मणीभाई कोठारी और जयनारायणजी व्यास आदि सम्मिलित हुए थे। प्रतिष्ठा व कॉन्फरेंस का अधिवेशन सानन्द सम्पन्न हो जाने पर श्री संघ ने एक सभा का आयोजन करके गुरुदेव को "**युग-प्रधान**" पद अर्पण किया उस समय सभा मंडप में देवताओं ने सर्वत्र केसर की वर्षा की।

बीसलपुर से गुरुदेव बामनवाड़ाजी तीर्थ पर पधारे। वहाँ आपके उपदेश से एक विशाल विद्यालय व बोर्डिंग हाउस स्थापित किया गया। सं. 1992 का वर्षावास आपने यहाँ व्यतीत किया। यहां हजारों लोग नित्य प्रति आपके दर्शन व उपदेश का लाभ लेते। सारा वातावरण आनन्दमय था व सब लोग हर्षित रहते। गुरुदेव जब कभी जंगल की तरफ निकलते जनसमूह झुण्ड के झुण्ड बनाकर पीछे हो जाते। गुरुदेव भी ध्यान की मस्ती में बड़े आनन्दित रहते थे।

चातुर्मास पूर्ण होने पर गुरुदेव मार्कंड आश्रम होते हुए सं. 1993 के ग्रीष्म काल में अचलगढ़ पधार गये। यहाँ आपकी गोचरी

लाने के लिए एक भोलामुनि आ गये। वे बिल्कुल गूंगे व बहरे थे किन्तु आपकी सेवा में रहने से कुछ ही समय में सुनने व बोलने लग गये। सं. 1994 का वर्षाकाल आपने देलवाड़ा में व्यतीत किया। यहां दांत में दर्द की वजह से डाक्टरों ने आपके कुछ दांत निकाल डाले।

मांडोली प्रतिष्ठा महोत्सव :

मांडोली के जिनालय में सुमतिनाथ भगवान के बिंब की अंजनशलाका व प्रतिष्ठा करवाने तथा दादा गुरु धर्म-विजयजी के मंदिर में प्रतिष्ठा करवाने हेतु मांडोली श्री संघ गुरुदेव के पास विनती करने आया। सं. 1994 के फागण सुदी 3 को गुरुदेव विहार करके सुदी 6 को रामसीन पहुँच गये। सुदी 7 के प्रभात पर्यंत रामसीन से मांडोली का मार्ग आपके दर्शनार्थ मानव समूह से खचाखच भर गया। एक भव्य वरघोड़े का आयोजन करके सुदी 7 को गुरुदेव का प्रवेशोत्सव सम्पन्न हुवा। सुदी 9 के दिन विविध पूजाओं के साथ अंजनशलाका की क्रिया पूर्ण हुई। सुदी 10 के दिन शुभ मुहूर्त में जिन मंदिर में सुमतिनाथ भगवान की प्रतिष्ठा व दादा गुरु धर्म विजयजी के मंदिर की प्रतिष्ठा गुरुदेव के कर-कमलों द्वारा असीम उल्लास व आनन्द के साथ की गई। प्रतिष्ठा के दूसरे दिन गुरुदेव अग्नि के प्रकोप निवारण हेतु एक कमरे में ध्यान में बैठ गये। कुछ मील दूर पूनक गाँव के एक झोंपड़े के पास कुछ समय आग का प्रकोप होकर शांत हो गया। इस मुहूर्त में प्रतिष्ठा करने के पहले गुरुदेव ने कहा था कि ऐसा प्रकोप होगा पर चिन्ता की कोई बात नहीं उसका निवारण कर देंगे।

सं. 1995 की गुरु पूर्णिमा मांडोली में बड़े समारोह के साथ मनाई गई जिसमें अनेक राजा-महाराजाओं व श्रीमंतों की भेंट आई। सेठ किसनचन्द लेखराज ने अपने भाषण में अपना अनुभव बताया कि गुरुदेव ने मुझे जीवन-दान दिया है। उन्होंने कहा "मैं अपने हैदराबाद सिंध के मकान में सो रहा था। रात्रि में इलेक्ट्रिक तार से मकान में अचानक आग लग गई। मैं गहरी निंद्रा में मग्न था। एकाएक आचार्य भगवान ने मुझे उठाया और दर्शन देते हुए कहा कि उठो तुम्हारे घर में आग लग गई है। ऐसा सुनते ही मैं घबराकर उठा और देखा तो मकान में आग लगी हुई दिखाई दी। गुरुदेव भगवान की कृपा से मेरे तथा अन्य बहुत-से नर, नारियों और बच्चों के प्राण बच गये।"

श्रावण वदी 6 को दादा गुरु धर्म विजयजी की निर्वाण तिथि मनाई गई। गुरुदेव ने दादा गुरु के जीवन पर सुन्दर प्रकाश डाला। इस पुण्य तिथि के दिन दादागुरु की चरण पादुकाओं से प्रात:काल खास समय पर दूध और गंगाजल बहा करता है। खंडाला घाट में कुछ समय ध्यान में व्यतीत करने के बाद धर्म विजयजी को स्वभावत: सहज ही आत्म-ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। आप इतने बड़े शक्तिशाली समर्थ पुरुष थे कि एक स्थान पर विराजते हुए भी आप उसी समय दूर-दूर देशों में अनेक स्थानों पर अपने भक्तों को दर्शन देते थे। श्री धर्म विजयजी ने अपने स्वर्गवास के एक महीने पहले ही भक्तों को बता दिया और कहा था कि जिस स्थान पर मेरा दाह संस्कार करो वहाँ पालखी के चारों तरफ नीम के चार सूखे खूँटे लगा देना। अग्नि लगाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। नीम के चार खूँटे गाड़ोगे वे

भविष्य में नीम के चार वृक्ष हो जावेंगे। मेरी मृत्यु के बाद भविष्य में जब कोई महान् आदर्श व्यक्ति प्रकट होगा तब एक नीम का वृक्ष अदृश्य हो जायगा। आपके कहे अनुसार सं. 1949 के श्रावण वदी 6 को प्रात:काल आप श्री का स्वर्गवास हो गया। अग्नि स्वत: ही आप श्री के दाहिने पैर के अँगूठे में से प्रकट हुई। शरीर के ऊपर के कपड़े, उपकरण, ध्वजा आदि अखंड बने रहे, केवल शरीर जलकर भस्म हो गया।

एक दिन गुरुदेव ने भोला मुनि (जो पहले गूँगा व बहरा था) द्वारा भिन्न-भिन्न संप्रदायों व मांडोली के पंचों की समस्याओं पर विद्वत्तापूर्ण भाषण दिलाया। वास्तव में उस समय भोला मुनि की देह के माध्यम से कोई और शक्ति (गुरुदेव की आत्म-शक्ति) ही कार्य कर रही थी।

एक दिन सभा में गुरुदेव ने जैन यूनिवर्सिटी खोलने के लिए आह्वान किया। श्रोतागणों में से कईयों ने दान में काफी सम्पत्ति देने का वचन दिया। सेठ किसनचन्द लेखराज ने भी 8-10 लाख रुपये देने की घोषणा की किन्तु बाद में किसी ने व्यवस्थित प्रचार व कार्य नहीं किया, जिससे यह काम आगे नहीं बढ़ा।

''ऐसी देहु उदारता, करि करुणा प्रभु मोहि।
सबको देखूँ एक सम, कबहुँ न भूलों तोहि॥''

विहार व जीवदया के महान कार्य :

मांडोली में नौ महीनों का समय आनन्दपूर्वक व्यतीत होने पर 48 गाँवों के पंचों की विनती पर सं. 1995 के मिगसर सुदी 3

के दिन गुरुदेव ने उम्मेदपुर जिन मंदिर की प्रतिष्ठा करवाने हेतु विहार किया। सियाणा, मणादर, हरजी होते हुए मिगसर सुदी 9 की दोपहर के 3 बजे आप विजय ललित सूरिजी आदि साधुओं और असंख्य जन-समुदाय सहित उम्मेदपुर गाँव में पधारे। सुदी 10 के दिन अमीझरा पार्श्वनाथ जी की प्रतिमा की प्रतिष्ठा बड़े समारोहपूर्वक आनन्द से कराई।

उम्मेदपुर से सुदी 13 को विहार करके पादरली होते हुए तखतगढ़ पधारे। तखतगढ़ से 2 मील पर वीटीया नामक गाँव है। वहाँ एक वीर के स्थान पर प्रति वर्ष 500 बकरों का वध होता था। दैवयोग से योगीश्वर श्रीमद् विजय शांति सूरीश्वरजी दिनांक 6 दिसम्बर, 1938 को तखतगढ़ से विहार करते हुए लगभग 4 बजे वीटीया गाँव पधारे। भोपे ने यह बात सुन ली थी कि गुरुदेव इस रास्ते से पधारने पर मुझे जीव हिंसा बन्द करने का उपदेश देंगे। इस भय से भोपा पहले ही वीर के मंदिर से भागकर 4 मील दूर किसी दूसरे गाँव में चला गया। गुरुदेव को मालूम हुआ कि भोपा यहाँ नहीं है तब आपने वहाँ दो मिनट ठहर कर वीर के स्थान पर अपनी अमी-दृष्टि डाली और विहार कर पोष वदी 3 संध्या समय बांकली पहुँच गये।

रात्रि में उक्त वीर ने भोपे को स्वप्न देकर कहा कि :— "गुरुदेव ने पधार कर अपने गाँव को पवित्र किया है और अब मैं उनका शिष्य हो चुका हूँ इसलिए आज से जीव-वध नहीं चाहता हूँ। तूँ भी गुरुदेव के पास जा और मेरी आज्ञानुसार जीव-हिंसा नहीं करने का गुरुदेव से नियम लेकर आ।"

उसी रात्रि में गुरुदेव ने भी भोपे को स्वप्न में दर्शन दिये जिससे उसको दृढ़ विश्वास हो गया। फिर भोपा दिनांक 11-12-38 रविवार दोपहर में 3 बजे बांकली आया, सैकड़ों देश-विदेश के यात्रियों और श्री संघ की उपस्थिति में गुरुदेव को विनयपूर्वक नमस्कार करके सब सत्य हाल (स्वप्न आदि का) कह सुनाया। गुरुदेव का उपदेश सुनकर भोपे ने यह नियम ले लिया कि ''आज से मैं वीर के स्थान पर या कहीं भी जीव वध नहीं करूँगा।''

अहा । कैसा हृदय परिवर्तन, कैसी अमीदृष्टि ।।

बांकली में 3 दिन ठहर कर पोष वदी 6 के दिन खिवान्दी गाँव में पधारे। यहाँ 70 वर्ष से समाज में कलह था उसे मिटाया। आठ दिन तक जनता को भक्ति-सुधा का पान कराया व उपदेश द्वारा सामाजिक सुधार किये, आपने यह व्यक्त किया कि कानून द्वारा समाज सुधार करने में भ्रष्टाचार बढ़ता है। अत: जन-साधारण को शिक्षित करना चाहिए ताकि वे स्वयं ही अपने रीति-रिवाजों में परिवर्तन करे।

खिवान्दी गाँव के पास एक गाँव में तालाब सूखा पड़ा था। जनता पानी के अभाव में परेशान थी। गुरुदेव ने वहाँ बैठकर ध्यान किया, पवित्र दृष्टि डाली, दूसरे दिन पानी आ गया। सब लोग हर्षित हुए। गुरुदेव की कैसी अलौकिक शक्ति।

सं. 1995 पोष वदी 13 के दिन गुरुदेव ने पोमावा की तरफ विहार किया। यहाँ जिनालय में श्री कुंथुनाथ भगवान की प्रतिष्ठा करने की थी और शांतिस्नात्र का भी आयोजन किया गया। पोष

सुदी 10 के दिन विहार करके शिवगंज पधारे। जहाँ डेढ़ महीना तक स्थिरता करके धर्मदेशना दी, विश्व-प्रेम और भक्ति का संदेश दिया। नगर में सर्वत्र आनन्द फैल गया।

फिर बड़गाँव, कलापरा, राडबर होते हुए चूली गाँव पधारे। वहां डेढ़ महीना विराजे। चूली से विहार कर चार मील पर उझमण नामक गाँव में विश्राम किया। यहाँ रात्रि के समय गुरुदेव ने नगीनदास भगत को साध्वीजी प्रमोद श्रीजी को बुलाने भेजा। साध्वीजी ने जाने से इंकार करते हुए कहा कि गुरुदेव रात्रि में कदापि नहीं बुलाते हैं, थोड़ी देर बाद उपाध्याय मणिसागरजी महाराज भी आए। उन्होंने भी यही संदेश दिया और कहा— ''शंका की कोई बात नहीं, भगत और मैं तुम्हारे साथ ही चलते है।'' तब प्रमोद श्री जी, राजेन्द्र श्री जी आदि सब साध्वियें साथ में गयीं। उन्होंने वहां पहुंचने पर गुरुदेव का बड़ा ही अलौकिक रूप देखा— कई शेर, चीते, साँप, बिच्छुओं के मध्य गुरुदेव विराजे हुए थे, एक सिंह अपना सिर गुरुदेव की गोद में टिकाये हुआ था, गुरुदेव उस पर हाथ फेर रहे थे। साध्वीजी म. ने कहा— ''गुरुदेव मैं यह क्या दृश्य देख रही हूं।'' गुरुदेव बोले ''**समस्त विश्व अपना परिवार है।**''

फिर अठवारा गाँव पधारे, वहाँ 60 वर्ष पुराने कलह को मिटाकर शांति स्थापित की। यहाँ से पोसालीया, भेव, पालड़ी, वागण, सिरोही, गोहिली, पाडिव, खांभल आदि ग्रामों में विचरते हुए सं. 1996 के वैशाख सुदी 6 के प्रात:काल में अनादरा पहुँचे, सुदी 7 के दिन प्राचीन जिनालय में प्रतिष्ठा कराके स्थिरतापूर्वक यहां विराजे।

"आशा के संबल को लेकर सत्य-धर्म-उत्साह।
अरे बटोही बढ़ता जा तूँ सत् चित् मयी औम् की राह॥"

गोल्डन जुबली : (स्वर्ण जयन्ती)

सं. 1996 की बसंत पंचमी के दिन गुरुदेव 50 वर्ष के हो गये, जिस निमित्त से भक्तों ने इस दिन अनादरा में गोल्डन जुबली (स्वर्ण जयन्ती) मनाने का निश्चय किया। भारत के कोने-कोने से बहुत-से भक्त-जन एकत्रित हो गये। आठ दिन तक खूब धूमधाम व भक्ति के साथ समारोह सम्पन्न हुआ।

यहाँ गाँव के अन्दर मंदिर के उपाश्रय में साध्वीजी प्रमोद श्री जी आदि ठहरे हुए थे। वहाँ गुरुदेव भगवान द्वारा प्रतिष्ठित पचास प्रतिमायें विराजमान थीं। संध्या समय जब सब साध्वी मंडल प्रतिक्रमण कर रही थीं, अकस्मात् एक सफेद सर्पिणी साध्वीजी के पास से होती हुई प्रतिष्ठित जिन प्रतिमा पर छत्र कर वन्दन करती हुई नृत्य करके सहसा अदृश्य हो गयी। प्रात:काल साध्वीजी जब गुरुदेव को वंदन करने गयीं तब गुरुदेव ने फर्माया कि— "कल तुम्हारे वहाँ सर्पिणी आई थी क्या?" गुरुदेव के मुख से यह सुनकर सब चकित हो गये। हर स्थान पर जो कुछ हो रहा है, उसका गुरुदेव कितना सूक्ष्म रीति से ध्यान रखते थे।

अनादरा में नीतिसूरिजी के संघाड़े के एक मुनिराज गुरुदेव के दर्शनार्थ आये। यह पहले स्थानकवासी सम्प्रदाय में थे तब इनका नाम दीपचन्दजी था। सन्ध्या समय गुरुदेव गाँव के बाहर एक मकान में

विराजे हुए थे, ये मुनिराज भी गुरुदेव के पास आकर बैठ गये। गुरुदेव ने उनको स्पर्श करते हुए कहा ''डर तो कोई नहीं है न?'' इतने में ही उन्होंने गुरुदेव के स्थान पर एक शेर को देखा। थोड़ी देर में वापस शेर के स्थान में गुरुदेव दिखाई देने लगे। प्रात:काल सभा में गुरुदेव के व्याख्यान के पश्चात् जब वे मुनिराज अपना यह अनुभव कहने के लिए खड़े हुए तब गुरुदेव ने ''ॐ शांति'' कह कर उन्हें चुप कर दिया और स्वयं सभा में से उठकर कमरे के अन्दर चले गये।

अनादरा में चैत्र सुदी में नवपदजी की ओली की आराधना धूमधाम से करवाकर आप असाढ़ सुदी 13 को देलवाड़ा पहुंच गये।

''जीवन ज्योति आसमय, साहस हो गुरु-मंत्र।
निराशा, विषाद, अधीरता, चिंता छोड़ो तंत्र॥''

अंतिम तीन वर्ष :

चातुर्मास पर्यंत आबूराज पर देलवाड़ा के जैन मंदिरों में आप आत्मजागृति में विराजे। आश्विन मास में नवपदजी का आराधन धूमधाम से करवाया गया।

देलवाड़ा से विहार कर गुरुदेव अचलगढ़ पधारे। सं. 1998 (ई.सन् 1941) चैत्र मास में नवपदजी की ओली के आराधन हेतु दूर-दूर से बहुत-से भक्त एकत्रित हो गए। गुरुदेव थोड़ा समय श्रीपाल राजा के रास पर प्रवचन दिया करते थे। चैत्रसुदी 13 महावीर जयन्ती के अवसर पर गुरुदेव ने एक बड़ी

खुली जगह पर विशाल सभा में 2-3 घण्टे तक उपदेश दिया। इस सभा में अनेक धर्मावलम्बी दूर-दूर से सैकड़ों की संख्या में आये थे। गुरुदेव ने लोगों के मन को निर्मल करने हेतु अध्यात्म का वर्णन करते हुए बहुत ही मार्मिक भाषा में हृदय के अन्तस्तल को छूने वाला प्रवचन दिया। सभा में कंवरलालजी निमाणी नामक फलोदी के एक सज्जन बैठे थे। उनके मन में शंका थी कि ये कैसे योगीराज हैं, इन्हें आचार्य कहते हैं पर आरम्भ-समारम्भ की बातें सुनते हैं, ओलीजी में भक्त लोग फंवारे, घमले पेड़-पौधे आदि की रचना करते हैं जिससे कर्म बंधन होते हैं आदि। व्याख्यान में इनके जैसे कई सज्जनों की शंका का समाधान होकर मन निर्मल हो गया, उनकी समझ में आ गया कि योगीराज तो पूर्णत: निस्पृह व अलिप्त हैं, हमारे मन की शंकाओं को जानकर उसका समाधान व्याख्यान में कर दिया।

सं. 1998 के भादवा मास में रात्रि के समय गुरुदेव पास वाले कमरे में से आते समय फिसल गये। जंघा की जोड़ वाली हड्डी (कमर के नीचे वाली) टूट गई, जिससे गुरुदेव खड़े नहीं हो सकते थे। नगीनदास भगत या किसी को पता नहीं पड़ा कि हड्डी में फ्रेक्चर हो गया है और न किसी ने निदान कराने व उपचार कराने का प्रयत्न किया। ऐसी परिस्थिति में भी गुरुदेव लेटते व बैठते और आने वाले यात्रियों को उपदेश व सांत्वना आदि दिया करते थे। डेढ़ महीने में हड्डी जुड़ गई और गुरुदेव लकड़ी के सहारे से चलने-फिरने लगे किन्तु इस दुर्घटना के कारण गुरुदेव बहुत ही अशक्त व दुबले हो गये थे। इन्हीं दिनों सेठ किसनचन्दजी के कुलगुरु प्रज्ञाचक्षु

श्री गंगेश्वरानन्दजी महाराज गुरुदेव के पास आये। वे कई शास्त्रों के श्लोक बोल कर उन पर चर्चा करने लगे। उनके मुख से श्लोक का एक शब्द निकलते ही गुरुदेव आगे का शब्द बोल देते। गंगेश्वरानन्दजी के साथ एक शिष्य था, उसने सोचा कि ये सब श्लोक तो शास्त्रों के हैं जिससे शांतिविजयजी को मालूम है ही। मैं कल नवीन श्लोकों की रचना करके लाऊँगा। प्रात:काल कुछ श्लोकों की रचना करके वे गुरुदेव के पास गए। श्लोक में का एक शब्द कहते ही गुरुदेव ने उनके रचित सब श्लोक कह दिये। इस प्रकार की चर्चा पूर्ण होने के बाद गंगेश्वरानन्दजी बहुत ही आनन्दित हुए और उन्होंने किसनचन्दजी को कहा कि— 'तूने पूर्ण ज्ञानी पुरुष को गुरु बनाया है, मुझे पहले भ्रम था कि तूने जिस किसी को गुरु बना लिया है।''

माउंट आबू के बस स्टेण्ड के पास '**शांति सदन**' नामक जो बंगला है, उसे **गुरुदेव ने चेरिटेबिल परपज के लिए** रुपये 42,000/- में सेठ किसनचन्दजी द्वारा खरीदवा लिया।

महापुरुषों की शक्ति के विषय में गुरुदेव फरमाते थे :— ''महापुरुष क्या नहीं कर सकता? ब्रह्मांड को फिरा सकता है, यानी कोई भी कार्य महापुरुष के लिए असम्भव नहीं है। द्वितीय विश्वयुद्ध के समय की बात है—अंग्रेज सरकार की ओर से सब धर्म गुरुओं को खबर दी गई थी कि युद्ध में हमारी जीत के लिए प्रार्थना करें। गुरुदेव के पास भी ए.जी.जी. की मार्फत वाइसराय ने संदेश भेजा कि— ''मैं और मेरा कुटुम्ब आपको रोज याद करते हैं आप हमें

आशीर्वाद भेजें।'' गुरुदेव ने कहलाया कि— ''मैं तुम्हारे लिए प्रार्थना करके शीघ्र शांति स्थापित करा सकता हूँ यदि यह शर्त मान ली जाय कि दूध देने वाले जानवरों का वध बन्द करने की घोषणा कर दें।'' गुरुदेव ने अनादरा से ब्रिटेन के प्रधानमंत्री लॉर्ड चेंबरलिन व पार्लियामेंट में भी इस विषय में काफी लिखा पढ़ी की थी। उस समय ब्रिटिश सरकार आपकी यह शर्त मानने को तैयार नहीं हुई, पर सन् 1943 में जब युद्ध में ब्रिटिश सरकार का हौसला मन्द पड़ गया और धुरी राष्ट्र आगे बढ़ रहे थे, भारत को भी जापान की तरफ से खतरा बढ़ गया तब भारत के गवर्नर जनरल लार्ड लिनलिथगो ने आपको अचलगढ़ तार भेजा और जॉर्ज षष्ठम् का टाइप किया हुआ पत्र गुरुदेव के नाम का आया हुआ भेजा जिसमें प्रार्थना की गई थी कि— ''आप हमारे लिए प्रार्थना करें, हम आपकी शर्त मानने को तैयार हैं।'' तार व पत्र जब आया उस समय जार्ज जुटजेलेटर व रूपचन्द हेमाजी भी वहाँ बैठे हुए थे।

गुरुदेव ने भी तार की बात निकाली और कहा कि— ''इस आशय का तार लार्ड लिनलिथगो गवर्नर जनरल का आया है, लेकिन अब मैं यह कार्य नहीं कर सकता, अब मुझे समय नहीं है। मैंने कहलाया था उस समय यदि सरकार मेरा कहना मान लेती तो मैं प्रयत्न करके इनका काम करके शीघ्र शांति स्थापित करा देता— मुझे एक भव और करना पड़ता।''

''गई वस्तु सोचे नहीं, आगम चिंतन नाहिं।
वर्तमान वर्ते सही, सो ज्ञानी जग मांहिं।।''

निर्वाण :

गुरुदेव ने अपने निर्वाण के 3-4 महीने पूर्व ही समाचार पत्रों में यह घोषणा निकलवा दी थी कि— ''अब कोई मेरे दर्शनार्थ नहीं आवे, मैं ध्यान में बैठने वाला हूँ— गुरुशिखर जाने वाला हूँ।'' फिर भी कोई चला जाता तो कहते— ''अब मेरे दर्शन नहीं होंगे, मैं गुरुशिखर जाने वाला हूँ।'' फिर कहते— ''महापुरुष को देह की क्या आवश्यकता है— मुझे बड़ा आनन्द है, इस देह से जो काम करना था वह सब मैंने कर लिया।'' सेठ किसनचन्द आदि बहुतेरे भक्तों को चार महीने पूर्व ही विदा करके भेज दिया था। इन दिनों तपसी छोगमल धन्नाजी ने 51 उपवास किए थे, वे गुरुदेव के कमरे के बाहर गेलेरी में सोते थे। उपवास काल में गुरुदेव की कृपा से उनको चक्रेश्वरी, सरस्वती आदि देवियों के अपूर्व दर्शन प्राप्त हुए। पारणे के बाद तपसीजी ज्योंही थोड़े ठीक हुए, गुरुदेव ने उनको भी अपने गाँव भेज दिया।

सं. 2000 के पर्युषण पर्व संपूर्ण होने पर गुरुदेव अचलगढ़ के शिखर पर चौमुखजी आदिनाथ भगवान व दुमंजिल के चौमुखजी आदि सब बिंबों के दर्शनार्थ पधारे।

इन दिनों गुरुदेव नाम मात्र के लिए थोड़ा-सा आहार लेते थे और प्राय: दिन-रात आत्म-समाधि में लीन रहते थे। दो-दो तीन-तीन दिन तक कमरे का दरवाजा भी नहीं खोलते और न किसी को दर्शन देते थे।

दिनांक 18-9-43 को सेठ फूलचन्द माणकचन्द शाह अपनी पत्नी लीला बहन के साथ बम्बई से आए क्योंकि दो दिन पूर्व उनके पुत्र कांतिलाल का देहान्त हो गया था गुरुदेव ने उनको आश्वासन देते हुए कहा कि— "उसकी सद्गति हुई है, मैं तुमको उसके दर्शन कराऊंगा।" फिर ये दोनों दिनांक 23-9-43 के दिन गुरुदेव से विदा लेकर वीरनगर के लिये रवाना हो गये। किन्तु गुरुदेव ने एक साईकल सवार भेजकर इनको माऊंट आबू से वापस अचलगढ़ बुला लिया। रात को साढ़े दस बजे उनको गुरुदेव ने बुलाकर टार्च की रोशनी में कांतिलाल के दर्शन कराये, दुबारा दिवाल पर टॉर्च की रोशनी में कांतिभाई के साक्षात् दर्शन कराए। फिर गुरुदेव ने सांत्वना देकर आत्म-शांति के लिये बोध-वचन कहे।

इस समय गुरुदेव को बुखार भी था और श्वासोच्छ्वास तीव्र गति से आता था। गुरुदेव की तबियत ठीक नहीं जान कर फूलचन्द भाई, लीला बहन, चंपक भाई, सूरजमलजी, कमलाप्रसादजी गुरुदेव के पास ही रात भर बैठे रहे। गुरुदेव भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण समय की चर्चा छेड़ते हुए उपदेश देने लगे कि— "कोई भी आयुष्य को एक पल मात्र भी नहीं बढ़ा सकता। जबकि भगवान महावीर स्वामी भी अपनी उम्र को एक पल मात्र भी नहीं बढ़ा सके तो फिर अपन तो किस गिनती में हैं।"

रात्रि में करीब ढाई बजे नाड़ी की गति मंद पड़नी शुरु हुई। वि. सं. 2000 की आसोज वदी दूसरी 10, गुरुवार, दिनांक 23-9-43 सितम्बर की रात्रि के याने 24-9-43 की सुबह की 3 बजे चौपन

वर्ष की यात्रा पूर्ण करके योगिराज ध्यानस्थ दशा में परम शांति के साथ इस नश्वर देह को त्याग कर परम-धाम को सिधार गये।

गुरुदेव ने देह त्याग करने के पहले अपनी आत्म-शक्ति से जगह-जगह कई भक्तों को इस विषय में संकेत दे दिये थे। इन पंक्तियों के लेखक को भी अहमदाबाद में दिनांक 23-9-43 दोपहर में 4 बजे गुरुदेव के फोटो में से स्वर्गवास की इस प्रकार स्पष्ट आवाज सुनाई दी।

गुरुदेव के निर्वाण व अग्नि संस्कार के समाचार भारतवर्ष के सब भक्तों को तार, टेलिफोन व रेडियो द्वारा दे दिये गये। दिनांक 24-9-43 को दोपहर में 12 बजे शांता बहन को भी अहमदाबाद टेलीफोन द्वारा सूचित कर दिया जिससे अहमदाबाद से 18-20 जने रात के 12 बजे अचलगढ़ पहुँच गये। गुरुदेव अर्द्ध-पद्मासन अवस्था में विराजे हुए, आधे नेत्र खुले, परम ध्यानस्थ दशा का आभास दे रहे थे। कमरे में चंदन की महक आ रही थी। गुरुदेव को देह छोड़े करीब 21-22 घंटे हो गये थे पर आपके नेत्रों में अनुपम ज्योति थी। मुख-मुद्रा अतीव सौम्य, सुन्दर, आकर्षक व सजीव थी। दर्शन करके यह मानना कठिन हो रहा था कि इस देह में से प्राण निकल गये हैं।

गुरुदेव की देह को अर्द्ध-पद्मासन अवस्था में पालकी में विराजमान करके अचलगढ़ से दिनांक 25-9-43 को प्रस्थान किया। दोपहर में माउंट आबू पहुँचे, वहां बाजार में जनता ने व एजेंट टु दि गवर्नर जनरल ने भव्य स्वागत किया। फिर पालकी को

ट्रक में विराजमान करके सारे जन समुदाय ने ''गुरुदेव शांतिविजय एनिमल हास्पिटल'' होते हुए मांडोली की ओर प्रस्थान किया। संध्या समय तलहटी में 'शांति आश्रम' नामक स्थान में रुके। सेठ किसनचन्दजी भी यहीं सम्मिलित हुए। पहुँचते ही सेठ साहब और रुक्मणी बहन ने गुरुदेव के सामने एकांत में बहुत भक्तिपूर्वक प्रार्थना की। सेठ साहब को गुरुदेव सजीव से दिखाई दिये। गुरुदेव ने सेठ साहब में साहस का संचार कर दिया जिससे उन्हें अपने कर्त्तव्य का भान होते ही उस पथ पर अग्रसर हो गये।

दिनांक 26-9-43, सूर्योदय होते ही कई बसें आकर खड़ी हो गयीं और एकत्रित जन समुदाय को बिना कुछ भी चार्ज लिये मांडोली तक पहुँचाने का प्रबन्ध श्री किशनचन्दजी ने करवा दिया। संध्या समय मांडोली पहुँचे। रात्रि में 10-11 बजे अग्नि संस्कार के लिए बोली शुरू हुई। यहाँ गुरुदेव ने शांता बहन को साक्षात् दर्शन दिये जिससे वे उत्साहित होकर बोली बोलने लगीं, अन्त में रु. 51,000/- पर उनके नाम पर बोली छूटी।

रात भर लोग बागरा-सिरोही आदि मार्गों से आते रहे, सुबह तक अपार मानव समूह एकत्रित हो गया और फिर भी आते ही जा रहे थे। गुरुदेव की माताजी और भाई भी यहाँ पहुँच गये थे।

सोमवार दिनांक 27-9-43 को सूर्योदय होते ही गुरुदेव की पालखी को पूर्ण चन्दन की चिता में रख कर दादागुरु श्री धर्मविजयजी की समाधि के पास ही अग्नि संस्कार कर दिया गया। चिता में सैकड़ों मन चंदन, खोपरा, नारियल आदि चढ़ाया गया।

घी के 30-40 टीन, गुलाब, कपूर, इत्र आदि सामग्री से चारों ओर सुगन्ध फैल रही थी। यह चिता निरंतर तीन दिन जलती रही।

संध्या समय किंकरदास आदि सैंकड़ों भक्त चिता के पास बैठे भजन गा रहे थे। अग्नि संस्कार प्रारम्भ होने के बाद पहुँचने वाले भक्त विलाप भी कर रहे थे कि हमें दर्शन नहीं हो सके। इतने में तो चिता की ज्वाला के ऊपर गुरुदेव ने सब एकत्रित जन समुदाय को साक्षात् अभय मुद्रा में दर्शन देकर शांति सुधा के पान से सब को मुग्ध कर दिया।

गुरुदेव के अग्नि संस्कार का कार्य सम्पूर्ण होने पर सेठ किसनचन्दजी, नगीनदास भगत, चंपकलाल, शांतिलाल भगत, कमलाप्रसाद आदि वापस अचलगढ़ गये जहां परमार्थ औषधालय में नगीनदास भगत के चार्ज में बहुत-सी अलभ्य जड़ी-बूटियाँ, दवाइयाँ, यंत्र व पूजन की मूर्तियाँ नाना प्रकार के रत्नों की मालाएँ आदि जो भेंट में आई थीं उन्हें लिस्ट बनाकर पूजा पेटी में रख कर सेठ किसनचन्दजी को सुपुर्द कर दी गयी, जो बाद सं. 2024 के दिपावली पर मांडोली मंदिर में गुरुदेव के ओघा आदि उपकरणों के साथ दर्शनार्थ रख दी गई। अग्नि संस्कार के स्थान पर किसनचन्दजी ने शीघ्र ही संगमरमर का विशाल सुन्दर मन्दिर निर्माण करवा दिया।

स्विट्जरलैंड निवासी श्री जार्ज भी अग्नि संस्कार के समय पालीताना होते हुए मांडोली पहुँच गये थे। गुरुदेव के वियोग से उद्विग्न होकर वह आबू की लाल गुफा में जाकर उपवासपूर्वक ध्यान करने

लगे। तीसरे दिन गुरुदेव ने प्रत्यक्ष दर्शन देते हुए कहा "George, Shanti is Great Yog" इसी प्रकार अपने निर्वाण के बाद भी गुरुदेव ने समय-समय पर कई भक्तों को प्रत्यक्ष व स्वप्न में दर्शन दिये और कइयों के स्मरण मात्र से ही कष्ट-निवारण किये हैं।

श्रद्धांजलियाँ :

योगनिष्ठ आचार्य श्री विजय केसरसूरिजी महाराज (योग शास्त्र आदि अनेक आध्यात्मिक ग्रन्थों के रचयिता) **के शब्दों में :—**

“मैंने मेरी जिन्दगी में यदि कोई अद्‌भुत वस्तु देखी है तो वह योगनिष्ठ महात्मा श्री शांतिविजयजी ही हैं। आप उच्चकोटि के आध्यामिक ज्ञान के भण्डार हैं। वर्तमान काल के सब साधुओं में केवल आप ही योग क्रिया और आध्यात्मिक ज्ञान के विषय में सर्वोपरि हैं। ऐसे महान् योगीश्वर को कोई महान् शक्तिशाली आत्मा ही अत्यन्त दीर्घकालीन अनुभव के पश्चात् ही शायद कुछ समझ सकती है।”

(‘शांति संदेश’ पुस्तक से उद्‌धृत)

आचार्य श्री विजय केसरसूरिजी का गुरुदेव से प्रथम मिलन सं. 1985 (सन् 1928) के मई मास में मारकंडेश्वर आश्रम में हुआ, योग के सम्बन्ध में चर्चा हुई। केसरसूरिजी जब विहार करने लगे तो गुरुदेव ने व्यवहार-मर्यादा हेतु वन्दन किया जिस पर केसरसूरिजी बोले कि— “मैं तो पदवी मिलने से आचार्य हूँ पर सही अर्थों में आप ही आचार्य हैं अत: वास्तव में मुझे ही आपको पहने वन्दन करना चाहिए।” दूसरी बार फिर आप गुरुदेव से विचार-विमर्श हेतु पालनपुर से धनारी पधारे व कुछ दिन साथ रहे।

आपने गुरुदेव श्री शांतिसूरिजी से कह रखा था कि अन्त समय में मेरी अवश्य खबर लेकर मुझे सचेत कर देना ताकि मैं समाधि मरण कर सकूँ। आबू में विराजे हुए गुरुदेव शांतिसूरिजी ने आपके अन्त काल के पूर्व आपको अहमदाबाद में दर्शन देकर सावधान कर दिया, जिससे आपने अपने शिष्य समुदाय महो. श्री देवविजयजी पं. लाभविजयजी आदि को सं. 1988 के भादवा वदी 5 के प्रात:काल ही कह दिया था कि "आज मेरे चारों आहार का प्रत्याख्यान है, आबू से योगीराज श्री शांतिविजयजी मुझे सूचित कर गए हैं कि मेरा अंतिम समय आ गया है, इसलिए मैं आज तैयार होकर बैठा हूँ। इसलिए अब तुम तैयारी करो, समय पूरा होने आया है आदि ....।" फिर आपने ध्यानस्थ अवस्था में उसी दिन संध्या समय 6 बजकर 35 मिनट पर देह त्याग कर, समाधि मरण किया।

('वृहत् जीवन प्रभा तथा आत्मोन्नति कारक वचनामृतो' नामक पुस्तक के पृष्ठ 352 से उद्धृत)

श्रद्धांजलि :

सर प्रभाशंकर पट्टणी, दीवान भावनगर :—

आप भावनगर स्टेट (सौराष्ट्र) के मुख्यमंत्री पद पर सन् 1933 तक रहे उस अर्से में आप गुरुदेव के सम्पर्क में आए और अपने निम्नलिखित विचार गुरुदेव के प्रति व्यक्त किए :—

"श्री शाँतिविजयजी एक उच्च कोटि के महापुरुष हैं। फिर भी इनका हृदय बालक की तरह खरा और निर्दोष है। महात्माओं

के लक्षण शास्त्र में कुछ भी लिखे हों पर ऐसी बुद्धि और हृदय का विचार बल तथा सरल बालभाव और इनका ऐसा सुन्दर समन्वय भाग्य से ही कहीं देखने को मिलता है । मुझे तो यही लगा कि यही तो महात्मापन का यथार्थ स्वरूप है। जब-जब मैं इनके पास गया हूँ, इनके सान्निध्य से मेरे हृदय एवं मस्तिष्क के भावों में ऐसी एकता प्रतीत हुई है कि केवल इनकी ओर देखने और इनका उपदेश सुनने के सिवा और दूसरी कोई भी वृत्ति मन में उत्पन्न ही नहीं होती है। प्रत्येक दर्शनार्थी को यही भास होता है, ऐसा मैंने देखा है। महात्मापन की इससे अधिक और क्या व्याख्या हो सकती है? लोकेषणा की इच्छा से आप बहुत परे हैं। मुझे बहुत-से महापुरुषों के परिचय में आने का अवसर मिला है परन्तु आप श्री का सान्निध्य मुझे अपूर्व प्रतीत हुआ है। कैसे और कितने अभ्यास का यह परिणाम होग , यदि यह समझ में आ जाय और तदनुसार करना शक्य हो, ऐसा मालूम पड़े तो सम्भव है वैसा करने की इच्छा हो जाय।''

('परम कल्याण मंत्र' पुस्तक में से उद्धृत)

इन्दौर के सरदार माधवराव विनायक कीबे एम.ए. के हृदयोद्गार :—

आप इन्दौर स्टेट में वर्षों तक डिप्टी मिनिस्टर और मिनिस्टर के पद पर रहे। आपको स्टेट द्वारा 'श्रीमंत' की पदवी मिली हुई थी और बहुत ही धनाढ्य थे। आपकी जगह-जगह पर 360 दुकानें भी थीं। आप बहुत ही गुणी एवं विद्वान् थे और साधु-सन्तों के पास जाते थे। गुरुदेव का नाम सुनकर आप भी उनके पास पधारे और आपने जो विचार व्यक्त किए वे निम्नलिखित प्रकार हैं :—

"'ज्यारे इन्दौर थी अमो आबू जवा माटे निकलया त्यारे 'टाइम्स आफ इंडिया' वांचता जणायुं के आबू मां महात्मा श्री शांतिविजयजी रहे छे अने तेओ एक दिव्य (Wonderful) शक्ति धरावे छे, कारण के तेओ श्री ने यूरोपियन, पारसी, जैन, मोहम्मडन अने हिन्दू दरेक पूजें छे। त्यारे अमारा मन मां पण विचार आव्यो के अमारे पण मलवु जोइए। अमो पण त्यां गया।

अमो तो एमने कोई अजब देवरत्न समज्या छीए, अने जेम-जेम अनुभव वधतो गयो, तेम-तेम अमोने प्रतीत थई गई के ए तो कोई अजब दिव्य पुरुष छे, ए महान् पुरुष ने ज्यारे आपणे जेवी जेवी भावना मां जोइए छीए तेवी-तेवी रीते तेओ पोते देखाय छे।

गुरु श्री शांतिविजयजी नो ऊपर नो 'सादो' देखाव जुदो अने अन्दर ना 'भव्य' गुरुदेव शांतिविजयजी जुदा छे। ए महान् आत्मा ने ओलखवा माटे महान् विचारक थवा नी जरूर छे।

ज्यारे ए महान् पुरुष ना आशीर्वाद (Blessings) मले त्यारे दुनिया ना मोटा-मोटा नामी डाक्टरोए पण जेने माटे आशा छोड़ावी दीधी हती, तथा ज्योतिषिओए पण जेने माटे हाथ खखेरी नाख्या हता, तेवाओ पण एमना आशीर्वाद थी सारा थई गया छे। जेने आपणे साधु कहिए, जेना दर्शन माटे आपणु पाप नष्ट थई जाय, ए साधुता कांई जुदीज वस्तु छे। गुरुदेव शांतिविजयजी ने तो बधा ओलखे छे, पण आपणी कांई महान् पुण्याई हशे तोज अन्दरना गुरुदेव श्री शांतिसूरिजी ने ओलखी सकाशूं। ते दिवसे आपणे 'ब्लेसिंग' खरे खरू जाण्यु कहेवाशे। विशेष शूं कहुं? एमनो आशीर्वाद एटलो बधो बलवान छे के जे केसने माटे दरेक-दरेक

माणसोए आशा छोड़ी दीधी हती ते व्यक्ति एवा महान् रोग थी मुक्त थई गया, ए मारो पोतानो खुद नो अनुभव छे।

हूं तो दुनियाना महान् योगेश्वर तेमनेज समझूं छूं। अहा। दुनिया मां आजे एवा देवरत्नो छे के जेनी पासे सिंह अने वाघ्र जेवा क्रूर जानवरों पण पालेला जानवरों नी माफक आवी ने बेसी जाय छे। एवा महान् पुरुष नो भेंटो थवो ते कांई साधारण बात नथी। एक वारतो दरेक-दरेक मनुष्ये ने एमना दर्शन करवा जोइए, एवी म्हारी दरेकने भलामण छे।''

('परम कल्याणमन्त्र' पुस्तक से उद्धृत)

Lord Chamberlain (लार्ड चेंबरलिन, प्रधानमंत्री ब्रिटेन)

Prime Minister of Britain

Oh Lord ! You are the Highest of the Highers, and God of the Gods. Your words are the essence of all Shastras (Scriptures)

□

Leftinant Colonel Sir George Oglive

K.C.I.E.C.S.I., York House

Upper Montague Street, London

Oh Lord of Lords !

For the welfare of all living beings you are sending blessings through wireless around the world.

आप माउंट आबू में 'एजेन्ट टु दि गवर्नर जनरल, राजपुताना थे' तब गुरुदेव की भक्ति में निरन्तर आया करते थे। बाद में हैदराबाद स्टेट में वाइसराय की तरफ से रेजिडेंट होकर गये वहाँ से भी गुरुदेव को पत्र लिखते रहते और पूर्ण भाव रखते थे। दिनांक 11-1-38 को आपने लंदन से पत्र लिखा, उसमें आपने गुरुदेव के आशीर्वाद का आभार मानते हुए लिखा है कि— "मैं आपको कभी नहीं भूलूँगा और सदैव आपको श्रद्धा व बहु मान के भाव से याद करता रहूँगा।"

श्री प्रभुदासभाई अमृतलाल मेहता उर्फ 'श्री बंशी' :—

('परम कल्याण मंत्र', 'नेहरू : फ्लावर ऑफ ह्यू मेनेटी'' "डिस्कवरी ऑफ जापान" आदि अनेक ग्रन्थों के लेखक)

आप गुरुदेव की जवानी के दिनों में, उनके समागम में आए और योग के विषय में काफी श्रवण व मनन किया। एक बार ग्रीष्म ऋतु में मारवाड़ प्रदेश में चल रहे थे, जोरों की प्यास लग गई। एक पानी का घड़ा दिखाई दिया पर पीने को नहीं मिला जिससे विचार में पड़ गये, इतने में जंगल में एक वृक्ष के नीचे गुरुदेव शांतिविजयजी के दर्शन हुए। दर्शन होते ही आपकी तृषणा अपने आप शांत हो गयी और आपने योगीश्री की आँखों में अपूर्व शांति अनुभव की। गुरुदेव के विषय में आपने गुजराती भाषा में इस प्रकार लिखा है —

म्हारा लांबा अभ्यासे अने म्हारा मननी जे साइजनी फुट पट्टी हती तेथी मांपता म्हें अनुभवेलुं के—

''योगी श्री शांतिविजयजी आ जीवन कलहनी मारा मारी बच्चे पड़ेला जगतने, अने आपणा संसारीओना उकली रहेला जीवन ने 'शांतिना अमृत' पानारी (पिलाने वाली) एक जीवतीं ठंडी मीठी साकरिया परब समा हता।

''क्रिया कांड मांज पडेली दुनियाने योगीना अन्तर नी खुशबो समझाय तेमां योगी ते शूं करे? तेने परवा पणाशी ?

''निजानन्द नो एक छुपो झरो तेमना अन्त:करण मांथी वही तेमना चेहरा पर रात दिन वरसतो मैं जोयो छै। एमनी बेय चक्षुओं मां थी नितरतु 'अमृत' अने तेनी पाछल वसेली योगनी झलती ज्योति केम भूलाय?''

''तेमनुं मौनज मोटी वाणी छै, कारण के जीभ करतां आंखोंज तेमनी अन्दरनी बधी भाषा बोले छे।

''तेओ बोलतां ओछुं पण मौन मांथी घणा शास्त्रो सरज्या छै। जंगल मां रहेता छतां ए विश्वना दूर-दूर ना बधा करंट साथे (touch) मां होय तेवी मोहिनी थी भरेला हता।''

('योगीराज शांतिसूरी जीवन यात्रा' में से उद्धृत)